महिषासुर मुर्दाबाद

एवं अन्य नाटक



महिषासुर मूर्दाबाद

एवं अन्य नाटक

नाटककार

राम भरोस कापडि 'भ्रमर'

प्रकाशक

सूरज प्रकाशन

जनकपुर धाम - १

समर्पण

कटारिक जगल मध्य अनचोके उगिआएल गुलावक फूल जकाँ मैथिली रंगमंचक सुखाएल महिला पात्रक डारिमे कनोजरि छोड़ि समस्त दर्शकके मंत्रमुग्ध कऽ देनिहारि बहुप्रतिभाक धनि महिला कलाकार श्रीमतो सरस्वती चौधरो कें ई नाटक संग्रह—सप्रेम !

—'भ्रमर'

महिषासुर मूर्दाबाद

[एकल नाटक]



प्रथम प्रदर्शन	:	२०५३ साल अगहन ४ गते
स्थान	:	नेपाल रेडक्रस भवन, जनकपुर - ४
निर्देशन	:	अमितेश साह
कलाकार	:	मुख्य पात्र : अमितेश साह
		सहायक पात्र : प्रदीप शर्मा, उपेन्द्र भगत, राम विनय मंडल, गुड्डु कर्ण, ओम प्रकाश ठाकुर, अन्देश भगत, प्रसुन कुमार, उदय नारायण ठाकुर, राम सरन महथा, स्वेता साह, अमृता चौधरी 'सपना', मिक्की भगत, ममता कुमारी
पार्श्वमे	:	ध्वनि : अभय कर्ण
		मंच सज्जा : उपेन्द्र भगत
		रुप सज्जा : अनुराधा भगत
		प्रकाश : दीपक कर्ण
प्रस्तुतकर्ता	:	आकृति, जनकपुर

महिषासुर मूर्दाबाद

पाश्वमे जीवनक सहजता देखाओल जा सकैछ । सभतरि लोक काज मे लागल अछि मुदा समाजक दुश्मन मौकाक ताकमे रहैत अछि आ अपहरण, बलात्कार, कालावाजारी करैत अछि । ताहीवीच एकटा खून भ जाइछ । ई ओहने समाजक दुश्मनक खून भेल रहैछ । पाश्वमे हत्या, खूनक शोर होवलगैछ । मंचपर पर्दा हटैत अछि, प्रकाश युवक - १ के हात पर पहिने परैत अछि, तत्पश्चात.प्रकाश युवकक सम्पूर्ण देहपर परैत देखल जाइछ । युवक - १ दुनु हाथमे लागल सोनितके निहारैत अछि । विस्फारित नेत्र सँ देखैत मुहक आकृति वनवैत विगाडैत अछि ।

युवक-१ : (स्वगत हाथके देखैत) खून सँ डुवल ई हमरे हाथ थिक ?

पार्श्वस : ककर लगैछौ ?

युवक-१ : (आश्वस्त होइत) ह, हमरे हाथ थिक । मुदा ई खून सँ भरल ?

पार्श्वस : ह, सोनित सँ भरल अछि । एकर परिणाम जनै छिही ?

युवक-१ : (चौकि) ऐं । नहि, मुदा अहा के छी ?

पार्श्वस : हम, हम जे केओ छी तोहर दुश्मन नहि छी ?

युवक-१ : तैयो अहां हमर पछोड किए घएने छी ?

पार्श्वस : किएक त हम तोरा सँ अलग नै छी ।

युवक-१ : अलग नै छी ..... (विस्फारित नेत्र सँ) माने, अहां कतौ पुलिसके आदमी त नै ?

पार्श्वस : नै रे मुरख । हम पुलिस रहितहुं त तो हवालातमे वन्न रहिते ।

युवक-१ : हवालात ! (कनेकचुप्पी) नहि ...... सत्य-सत्य वाजू अहां छी के ?

पार्श्वस : हम .... ?

युवक-१ : ह, अहां .... ?

पार्श्वस : हम तोहर आत्मा छियौ, आतम पुरुष ।

युवक-१ : (आश्वस्त होइत) ओह । (कनेक चुप्पीक सँग एक ठामवैसि रहैछ) मूदा ई जिज्ञाशाक अर्थ ?

पार्श्वस : मात्र तोरा सचेत कराएव ।

युवक-१ : ओह ..... ।

पार्श्वस : तएं नै पुछलहुं अछि, परिणाम वुझल छौक ?

युवक-१ : नहि, हमरा किछनै वुझल अछि । हमरा जे करवाक छल कs देलिऐ ।

पार्श्वसं : एकर माने छौ तो ककरो हत्या कयने छहीक ।

युवक-१ : (पुन : चौकिकs) हत्या । (किछु विचलित भ') हं, हम हत्या कयलहुं अछि । ..... एखने टटके ।

पार्श्वस : आव की हयत से वूझल अछि ?

युवक-१ : आव । आव की हयत । जे हयवाक छलै से भs गेल । हम मारि देलिऐक अछि महिपासुर के ।

पार्श्वस : हम मरनिहार दे नै, तोरा दे कहै छियौ ।

युवक-१ : (विस्मयसं) हमरा दे । आव हमरा की हयवाक अछि ।

पाशर्वसं : (जोरसं ठहक्का) आव तोरे होयवाक छौ ।

युवक-१ : (कातर नजरिसं चकुआइत) नहि, आव हमरा किछुओ नै भs सकैए ।

पार्श्वस : आव तोरा फांसी हयतौ ।

(पृष्टभूमिमे फांसी शव्दक इक्को गुंज लगैछ ।)

युवक-१ : (ठामे वैसैत) नई । हम मरs नहि चाहै छी ।

पार्श्वस : (पुन : ठहक्का) ह, एहिना लोकके खून करैत रह, आ जीबाक सपना देखैत रह ।

युवक-१ : नई, नई । हम फांसीपर लटकs नहि चाहैछी । एखन हम जीअ चाहैछी ।

पार्श्वसं : (गम्भीर स्वर) कीन्नहु नहि । केओ ककरो हत्या कक जीवि नहि पौलक अछि ।

युवक-१ : तखन ?

पार्श्वसं : तखन तोरो मरs पडतौ । फासी पर तडपि तडपि ।

युवक-१ : (शान्त स्वरमे) हमरा मरलासँ एहितरहक अराजकता जे किछु काल पूर्व देखल से वन्न भs जाएत ? नई । ते हमरा कहुना वाचs पडत ।

पार्श्वस : वाह, वाह, एहिना मारैत रहु आ जीवाक इच्छा जगौने रहु । खूव, वहुत खूव ।

युवक-१ : (सशंकित भ') तखन ? (पाश्वमे पुनः फांसी शव्दक पुनरावृति किछु कालघरि)

युवक-१ : वस करु । हम कीन्नहु मरs नहि चाहै छी ।

पार्श्वसं : जखन मरवासँ एतेक डर छलौ त हत्ये किए कैलै ?

युवक-१ : (रोषसँ) के कहैत अछि, हमरा मरवासं डर अछि ?

पार्श्वसं : (आश्चर्य मिश्रित स्वर) आहिरे । तोही वजै छे ?

युवक-१ : हम ? नई, की हम कहलहुं अछि जे हमरा मरवासं डर .... ।

पार्श्वसं : (वातके लोकैत)तो तँ बजै छे हम फाँसी चढ नहि चाहै छी । एकर की माने भेलै ?

युवक-१ : एकर माने ई त नहिए भेलै जे हम फाँसीसँ डेराइत छी ।

पार्श्वस : तखन ?

युवक-१ : हम एखन किछु दिन मर नहि चाहैछी ।

पार्श्वस : किए ?

युवक-१ : (शांत स्वरमे) जाहि कारणस हम ई पहिल हत्या कयलहु अछि ओ पूर्ण नहि भैल अछि । एकटाके मरिते बहुतो जनमि कs ठाढ भs जाइत अछि ।

पार्श्वसं : की माने ?

युवक-१ : माने साफ अछि । एहि समाजमे कुण्डली मारने वैसल विषयर साप सभक फनके थकुचवाक हमर अभियानक ई पहिल शिकार थिक । एखन तं संयौं एहन विषधर खुशफैलसं घुमि रहल अछि ।

पार्श्वस : त तोहर माने एखन तनोसभक आओर हत्या करवही ?

युवक-१ : (प्रशन्न होइत) ह, आब अहा बुझलिऐ ।

पार्श्वस : मुदा सिपाही, कानून तोरा छोडतौ ?

युवक-१ : (ठहक्का लगा हसैत) सिपाही, कानून !

पाशर्वसं : डर नहि लगैछौ ?

युवक-१ : ककरा सँ ? कानून सँ ?

पार्श्वस : हँ कानूनसं । आइ नै काल्हि त पकडवे करनौ ।

युवक-१ : नहि, किन्नहु नै पकडि सकत । हमरा अपन अभियानके जारी रखवाक अछि । तएं कानूनो सँ बच पडत ।

पाशर्वस कतेक दिन धरि .... ?

युवक-१ : ता धरि जा धरि समाजक समस्त महिषासुरके छाती चीरि कS सोनित हम पीवि नै लेवै ।

पार्श्वस : (चट द) तावत न हाहाकार मचि जएतै ।

युवक-१ : मचिजाउ ! पापक घैल भरि गेने ओकरा फुटव नीयति छै । केओ त ओहि घैलके फोडवाला आगा आओत । (पार्श्वमे चुप्पी)

आनक वहु बेटीके इज्जत लुटनिहार, पाँचसय टकाक मूरिके पाँच हजार बना घराडी समेत छिनि लेनिहार, जुआन बेटीक पीडा भोगैत बापक नोरपर हँसनिहार, गरिवीक दर्दके महज मजाकक बस्तु बना अपन शानोशौकत देखौनिहार नरपिशाच सबके आव सु न पडतै ।

पार्श्वमे (चुप्पी) हमरो बापके एहि दुवारे मरि जाए पडलै जे ओ महाजनक टका सधा नहि पौलक आ बोखारोमे खेतमे काम करवापार वाध्य कएलगेल, भुखले पिआसले बोखारस थर थर कपैत हमर बाप ...... की एहि दुआरे दायाक पत्र नहि छल जे ओ जातिक चमार रहय ..... अछूत नीच ।

पार्श्वमे (चुप्पी) आब मुह किए बन्न गेल । बाजू नै । की अपराध रहै हमर पिता बटोही रविदासके जे जेवीमे धयल गोटीयो नै खा सकल पानिक अभावमे । हर छोडि नै सकैत छल आ केओ पानि आनि क दितै नै । ठामे अररा कS खेतमे खसि पडल रहै ..... बाजू छै ओहन दुराचारी शोषकके जीवाक अधिकार ..... ?

पार्श्वस : मुद्दा नैयो कानून त कानून होइछै ।

युवक-१ : (रोषस) कानून कानून कानून । एही कानूनक आडमे त ओ चण्डलवा सभ अपन कुकर्म करैत अछि । केहनो अपराधमे सवूतक अभावमे साफ वचि निकलि जाइत अछि । एहन के लेल आव एहने निसाफक जरुरति छै ।

पार्श्वस : जे काज कानून करैत ओ तो कS कS अनेरे फाँसी पर लटकि रहल छें ।

युवक-१ : (पुन : उतेजित भS) नहि, हम फासी पर नहि लटकि रहलछी आ लटकवो नै करव । पहिने समाजमे छिडिआएल एहि महिषासुर सभके सुडाह कS देवै, तकरा वाद देखल जएतै ।

पार्श्वस : से कानून कर देतौ तखन नै ।

युवक-१ : कर किए नै देत । अन्याय, अन्याचार, शोषणक विरुद्ध हमर लडाईसँ हमरा अहाके कानून रोकिनै सकत आव ।

पार्श्वस : कतेक अत्याचारीके तों सुडाह करबही । ई त रक्तवीच सभ अछि । एकके कटिते फेर दोसरो जीविकS ठाढ भS जाएत । कतेकके गरदनि छोपबही ? कतेकके ... कतेकके ('कतेकके' शव्दक प्रतिध्वनि कनेक काल गुँजैत अछि ।)

युवक-१ : (आश्वस्त भS) हँ, ई त अहाँ बुझलहुँ नै जे अत्याचारी शोषक, विघर्मी सभ रक्तवीजक जनमल अछि । कटिते जनमि उठैत अछि महिषासुर जकां, तएने हमरा अहाँसँ सहयोग चाही ।

पार्श्वस : सहयोग ? हमरासँ । कोन तरहक ?

युवक-१ : वस, अहाँ सभ हाथ वढा कटोरी जका गोल कैने जाउ आ हम महिषासुरक गरदनि छकरैत छी, अहाँ सभ ओकर सोनित अपन हाथक कटोरीमे लोकि लिअ । (पार्श्वमे चुप्पी) कीएक त जौ रक्त स पुन : जनमि ठाढ हयवाक भय नहि रहत त वहुतो

हमरासन लोक तरुआरिलS आगा कूदि पडत । लेहुलेहुआन भS जएतै महिषासुर सभ ।

पार्श्वमे : (चुप्पी)

युवक-१ : बुझल नहि अछि, अत्याचारी महिषासुरक दमन करवाकलेल देवता सभक सयुक्त शक्तिक रुपमे माँ दुर्गाक उदय भेल रहै । आ वन्धु सभ ! अहाँ सभक सयुक्त शक्तिसँ उदय हयतैक आत्म बलक दुर्गा आ संहारकS देत महिषासुर सवके ।

पार्श्वसं : वात त ठीके छै ।

युवक-१ : तखन चलु हमरा सँग । वरु हम चहरि जाएव फाँसी पर हमरा कोनो दुखो नहि हयत । ह कम सँ कम एकटा वाट जे वनि जएतैक ताहिसं प्रत्येक महिषासुर पुन : जनमबाक चेष्टो नै करत । आउ हमरा सभ कालवनि महिषासुरक छाती पर ठाढ भS जाइ । (युवक - १ क पाछासं समान पहिरन ओढने दुनुकातसँ तलवारक सँग कमश : एक एक कS दू युवक वहराइत अछि । एहि वीच पार्श्वसं त्राहिमाम त्राहिमामक स्वर अनुगुँजित होइत रहैछ ।)

युवक-१ : (अनेक कालक चुप्पी) लगाउ हमरा सँग नारा .... ।

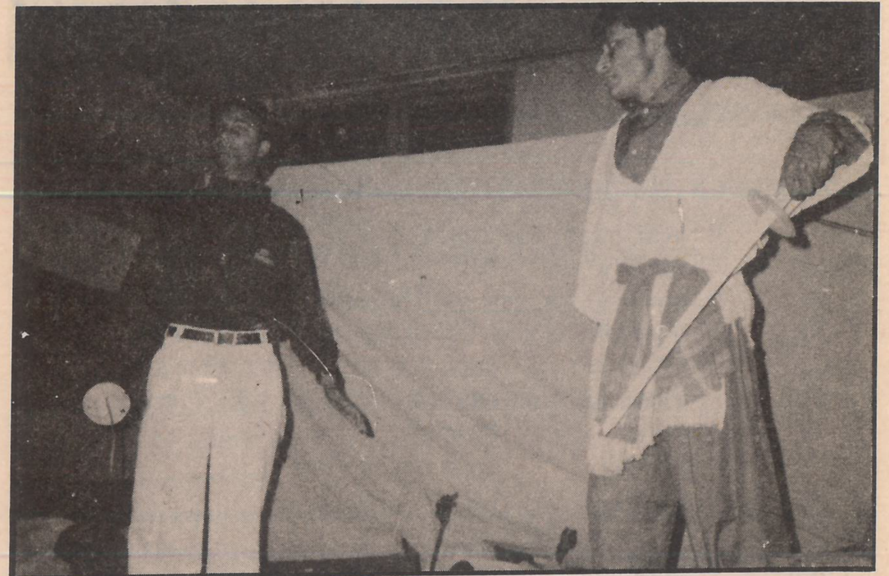
दुनुआकृति : ठीक छै । लगाउ नारा .... ।

युवक-१ : महिषासुर .... ।

आकृति : मुर्दावाद ॥

एकरा कनेक काल दोहराओल जाइछ । प्रतिछाया आकृति पुन : पूर्ववत् एक्केमे समाजाइछ । प्रकाश कमवद्ध वन्द होइत अन्हार भS जाइछ ।

* * * * *



सुरुज उगबासं पहिने



प्रथम प्रदर्शन : २०५२ साल अषाढ १६ गते
स्थान : नेपाल राजकीय पज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी, काठमाण्डू
निर्देशन : वलराम प्र. राय
कलाकार : वलराम प्र. राय, प्रदीप शर्मा, विजयकान्त ठाकुर, राम विनय मंडल, उपेन्द्र भगत, मिथिलेश गुप्ता, अमितेश साह, सतोष साह, अन्देश भगत
महिला पात्र : श्रीमती विद्या चौधरी, श्रीमती वविना साह ।
पार्श्वमे : संगीत : सुमन कुमार नेपाली
प्रकाश : दीपक कर्ण
रुप-सज्जा : श्रीमती सरस्वती चौधरी
मच-सज्जा : राम भरोस कापडि 'भ्रमर'
गायन तथा वासुरी : अभय कर्ण ।
प्रस्तुतकर्ता : आकृति, जनकपुर

सुरुज उगबासं पहिने

दृश्य-१

एकटा निम्न आयवर्गक घरक अंगनई । फुसस छारल घरक ओसारा पर दहिनकात घैलची । जाहिमे सम्भवत : भरल पानिक घैल राखल । वामकातक ओसारा पर गोनैर गुरियाकऽ धयल । घरक वाम दिश एकटा आर फूसक घर देखि पडैछ, जकरा पाछाक अतिरिक्त कोनो टाट लागल नहि । घरमे दूटा बकरी आ तीनटा छोटछीन बच्चा, किछु घास-फूस । घरक दहिनकात टाटक घेरा जे आंगनके घेरवा लेल लगाओल गेल रहैछ । ताहिमे आंगन प्रवेशक एकटा दरबज्जा खूजल ।

एकटा अघेर पुरुषक प्रवेश । जेना थाकल - झमारल हो ।

पुरुष-१ : (जोरसँ हाक पाडैत) ऐ, कत गेली ?
दुनू हाथमे माटि लगौने महिला घरमेस वहरा अबैछ ।

महिला-१ : की बात है ? ऐना हुलिया कैला हबे ?

पुरुष-१ : अहाँके हाथमे ई माटि !

महिला-१ : हँ, कनी वीछनके घान रहै, तकरे कोठीमे धऽ कऽ लेबैत रहिऐ । सब नीक नाहित है ने ।

पुरुष-१ : (बकरी घर दिश राखल टुटलहा बाँहिबला खुरसीके घीचि आगनमे लऽ अबैछ । तावत महिला घैलचीसँ एकटा लोटामे पानि ढारि हाथ धोव लगैत अछि ।)

पुरुष-१ : (खुरसीपर बैसैत) : आब त गाममे चलव कठिन भऽ गेल ।

महिला-१ : (हाथ धोइत) से कैला ?

पुरुष-१ : अही रछसबाके खातिर ।

महिला-१ : (धोएनाई छोडि) कनी फरिछाउने ।

पुरुष-१ : अहाँके सुपुतर आब नाक कान कटाकऽ छोडत ।

महिला-१ : (पुन : हाथ धोइत, मुस्कियाकऽ) धुत ! कहु अशोकबा मौगी है से नाक कान कटौत ।

पुरुष-१ : सेहे त बात है । लोकके घरमे जुआन बेटी रहै है त नाक कान कटाब के डर रहै है । हमरा त बेटो तेहने आफत भऽ गेल है ।
महिला हाथ धोकऽ नूवामे हाथ पोछैत ओसारापरक गोनैर खुरसीक बगलमे धऽ ओहि पर बैसि रहैत अछि ।
हम ठीके कहैछी, अशोकबा माय । ई छौडा त बड मुश्किल करत ।

महिला-१ : (साकांक्ष भऽ) आखिर बात भेलै की ?

पुरुष-१ : (दीर्घ निसांस छोडैत) की कहु ! आइयो कहादुन गौछलीमे दारु पीवि कऽ औंघरायल छल ।

महिला-१ : गे माई गे माई ! एना नै होतै ! हमर बेटा एना नै कैने होत ।

पुरुष-१ : (कनेक खिसिया कऽ) त जे देखलकै से झूठ भऽ गेलै ?

महिला-१ : आगि लगबबलाके कमी है जुगमे ।

पुरुष-१ : (फेर डपटि) चुपु ! अहीकें दुलार ओकरा बीगाडि देलकै । जहिया कहियो डपटैत रही त चिचिआ उठी - एकेटा बेटा है, कर दियौ जे करै है । आ आई ...... ।

महिला-१ : हमरा नै लगैए, अशोक दारु पीब कS औंघरायत । उ त दारु नै पीवैअ ।

पुरुष-१ : अहाँ केना जनै छिए जे ओ नै पीबैए ?

महिला-१ : माई त बेटाकें मुँह देखक' ओकर सबकुछ बुझ्फ सकै हैने ।

पुरुष-१ : तखन अहाँ फेल भ गेली । अहाँके बेटा दारु नै गजो -भाग पीवैअ ।

महिला-१ : (चिहुकिकS) चुपु ! अही जखन आगि उठबै छिऐ त आनलोक कथी कहैत होतै ।

पुरुष-१ : हम बुझै छली अहाँ हमरो बात नै मानब । तैसने, एतेक दिन स बात पेटमे धएने रही । आई नै रहल गेल त बाजही पडल ।

महिला-१ : (अविश्वाससं) नै, हमरा त मन नै मानैए । अशोक ऐतक नीचां खसि पडत । लोक चुगली लगब चाहैत होतै ।

पुरुष-१ : लोकके चुगली लगैने फयदा ?

महिला-१ : हमर बेटा काविल है । लोक बीगार' चाहैय ।

पुरुष-१ : (दीर्घ निसांस छोडैत) हुँ, काविल ।

कुरसी सँ उठि आंगनमे टहल लगैछ । एक चक्कर लगाकS रुकि जाइछ ।

आइ बी. ए. पास भेला आठ वर्ष भS गेल । पाँच पाइके नोकरी ने कS भेलैए । आ काविल है कहाँदुन !

महिला-१ : (उठैत) त की नोकरी अपना वसके बात है । की - की फीरशानी ने उठौलक । की वैसल है छौरा ?

पुरुष-१ : भेटल नै रहै ? केहन चिक्कन नोकरी भेटल रहै । दुइओ मास टीक सकल ?

महिला-१ : (रोषस) फेर ओइ नोकरी के बात उठैली । अहाँ जनै नै छिए, ऊ कैला छोरलक उ नोकरी ?

पुरुष-१ : जनै छिऐ । लेकिन हम पुछैछी आब दोसर उपायो की छै पेट भरके ।

महिला-१ : (आँखिमे नोर भरि अबैछ) हे, भगवान, ई की सुनबैछा । जिनगी भरि दू हजार रुपैया मे घीघरी काटीयो कS उपरका आमदनी के आशा नै करबलाक मुंहसं की सुनवैछा ।

पुरुष-१ : (भावुक भS) अशोकवा के माय, हमर बात दोसर रहै । पेटो काटिकS बाल-बच्चाके पालि लेलिए । आब से नै भS सकतै ।

महिला-१ : होतै कैला नै । हमर बेटा भुखे मरि जायत, हम सभ भुखे रहिलेब, लेकिन बेटा के हम नै कहबै सरकारके आंखिमे गरदा फोंक्किS समान के एमहर सं उमहर हटाब ला ।

पुरुष-१ कनीक धीरज स सोचियौ, सरकार के के नै चोर है । देखू इमान्दारीके इनाम । एकटा फूसघर सं दोसर नै बना सकल छी नै पर महाजनी के तगेदा । घरो घडारी बेचला पर सधत ?

महिला-१ : नैसकी ? हमर बेटा मालिक के खातिर अपन इमान बेचो ! असली के नाम पर नकली दवाई बेचो । गाजा-हफीम-चरस बेचो । नै - नै - नै ।

महिला थच्च दS गोनैर पर बैसि रहैत अछि । दुनु हाथे माथ पकडि हांफ लगैत अछि । पुरुष - १ सेहो गोनैर पर वैसि रहैछ आ महिलाक पीठ पर हाथ धS ढाढस वन्हव लगैछ ।

पुरुष-१ : अशोकक माय ! अहाँ कलयुग मे वैस कS सतयुग के बात करैछी ।

महिला-१ : मुदा से सतयुग मे रहके लेल के सिखौने है हमरा सभके ?

पुरुष-१ : (गुम्म भS जाइछ जेना शून्य आकाशमे दृष्टि गडादैछ ।)

महिला-१ : बाजू, अशोक के बाबू । हम सभ आइयो सतयुग के सपना कैला देखै छी ? की हम नै देखै छी, काल्हि पीउन - मुखिया के नोकरी धयलक आ आइ वंगला पीटि लेलक । हम सभ आन्हर छी, संगे नोकरी कैने जलील मियां दुनू बेटाके डाक्टर आ इन्जिनियर बना लेलक । अही के गोधिया रहे नै राजीन्दर, बेटी के विवाह केहन कैलके - पाँच लाख स उपर के खर्चा रहै । (चुप्पी)

पुरुष-१ : (ओहिना निर्विकल्प आकाशमे देखैत रहि जाइछ ।)

महिला-१ : हम इहो भोगैछी अशोकक बाबू । अहांके पेन्सन पर घरो चलायब जखन कठिन है तखन महाजनके कर्जा कत सं देबै । आ तैस वेर-कुवेर बेइज्जत होइ छी । सब सहै छी ।

पुरुष-१ : (गुम्म भेल बैसल अछि ।)

महिला-१ : मुदा तैयो हम सभ दुखी नै छी । एहनो मे हंसिकS जीवाके हम सभ अहीसं सीखने छी मुखिया साहेब । (हिचुकS लगैछ)

पुरुष-१ : (विचलित भ उठि जाइछ । टहल लगैछ ।)

महिला-१ : (आँखि सं नोर खसैत) आइ जं हमर बेटा दारु पिविकS कतौ ओघरायल अछि त तकर कारण अहा हमरा सं किए पुछै छी । अहां अपना स नै पुछि सकै छी ?

पुरुष-१ : (चिचिआकS) वस करु अशोकक माय, वस करु । आब नै सुनल जाइए एक्कोटा बात ।

पुरुष-१ : (घरफराकS खुरसी पर बैस चाहैछ, मुदा निचा खस' लगैछ ।)

महिला-१ : (उठैत पतिके पकडैत - सम्हारैत) अहाँ ठीक स वैसू । (कनेक कालक चुप्पीक वाद) आबो त कलमुहे । हम दारु पीब कS ओघरैनाई छोडा दै छिऐ ।

अन्हार

* * *

दृश्य-२

दृश्य पूर्ववत् । आंगन मे चारिगोट युवकक प्रवेश । युवक - १ किछु आगा बढि हल्ला करैछ - माय, गे माय । कोनो उत्तर नहि सूनि निराश भS जाइछ ।

युवक-१ : (आन सगी स) भाइ, लगै छौ, माय नै हो । देख, आइ एतेक दिनपर हमरा घरेअयबो कयले त हम चाहो ने पिआ सकलियौ ।

युवक-२ : छोड - छोड, चाह - ताह । आ, काकी नै छथुन्ह तावत एक - दू हाथ भS जाए ।

युवक - ३,४ जल्दी सँ ओसारा परक गोनैर उठा कS आंगनमे वीछा दैत अछि । तिनु जल्दी सँ ओइ पर बैसि जाइछ । युवक - १ एखनो आंगनमे एककात चुप चाप खडा अछि ।

युवक-२ : आ न यार । कका - काकी जावत नै छथुन्ह, एक दू हाथ भ जाएमे कोन अन्हेर भ जएतै ?

युवक-३ : की होतै, गोलखाडी कि पपलु ।

युवक-४ : हे, गोलखाडीए चल दही । वड मजा अबै छै ।

युवक - २ तास नीकालि वांट' लगैछ । युवक - १ एखनो ओहिना ठाड अछि ।

युवक-३ : भाइ अशोक, हद भ गेलै । हम सभ तासो बाँटि चुकल छी आ तो माटिक मुरत जका ठाडे छे । आ, जल्दी बैस ।

युवक-१ : (मना करैत) नै भाइ, हम नै खेलबौ । तो सभ जनै छे हम टवेन्टी अइट छोडकS आर किछु नै खेलै छी ।

युवक-२ : आ ओइ दिन ?

युवक-१ : एही शर्त पर जे पाइके खेल नै होतै, तखन खेलने रही हम ।

युवक-२ : दुत् । तब त मजे किरकिरा भ' जएतै । आइ त हमर हाथ हौआइए । पता नै की होतै ।

युवक-१ : भाइ, समेट ई सभ । आयल छे त बरु कनेक काल आरो वैस । माय अविते होतै । चाह पीव कS जो ।

युवक-२ : नै, हम त एक हाथ खेल आयल छली ।

युवक-१ : एहने जीद कS कS काल्हि किछु वेसी चहरि गेल छल । गौछलीमे आंखि झपा गेल । कोइ देखने होत की कहने होतै । किछु सोचलही ?

युवक-२ : यार बबाजी । नै तो जुवा खेल' सकैछे, नै दारु पीव' सकैछे, नै ककरो देह मे सटि सकैछे, तखन छे किएक ।

युवक-१ : भाइ, जहिया ई बात बूझि जएबही, तोहु हमरे सन भ जएबे ।

युवक-३ : नहि, एहन श्राप नै दे । तोरा जका आदर्शवादी बनिकS भीक्खड बन स नीक समय के साथ चलब आ खुब मौज करब ।

युवक-२ : ठीके कहै छौ भाई । आठ वर्ष सँ वौआइत छे, किए नै भेटै छौ कोनो काज ?

युवक-१ : (सहटि कS गोनैर पर वैसैत) जखन तालिम छै त आइ नै काल्हि भेटवे करतै की ।

युवक-२ : तालिम । रौ बूडिबक !! तालिम के धो धो क' चटैत रह । तोहर पाछाके लोक आइ कनेक आगा बढि गेल छौ, पता छौ ?

युवक-१ : सभ पता है ।

युवक-२ : खाक पता छौ । किसुनमा के कोन तालिम छै । आइ मोटर साइकल चढै है । एक साझ मे सय - दू सय फूकि दै छै । कत स अबै है ?

युवक-१ : त से हमरा नै चाही । जहिया होतै नोकरी, तहिया तक रस्ता देखबै ।

युवक-२ : हम सभ जनै छी । तोरा पर दोसर रंग नै चढतौ । काकाक रंग जे एक बेर चहरि गेलछौ ओ जल्दी नै छुटतौ ।

युवक-१ : तो सभ जे कही । (एम्हर ओम्हर तकैत)लगैए, माय कतौ आन ठाम चलि गेल छै ।

युवक सभ उठैत अछि ।

युवक-२ : अच्छा भाई । वेरियामे आइ भागके भोज छै । दलाने पर चलि अबिहे । हम सभ एखन जाइ छी, गौछली मे इन्तजार होइत होएतै ।

युवक - १ सेहो उठिक' जाइछ । युवक सभ के वहार होइत एकटक्क देखैत रहैछ । तखने महिला - १ क प्रवेश । मायके देखिते युवक - १ चौकि उठैछ ।

युवक-१ : से त अएबे कयले । सब चलि गेलै तब ।

महिला-१ : तोरा स त बाजके मन नै करैअ ।

युवक-१ : (दुलार स) कैला माय । की अपराध हम कैलियौ गे ।

महिला हाथ महक कोनो वस्तु घर मे ध' अबैत अछि । फेर निचैन स आंगन मे राखल खटीया पर बैस जाइत अछि ।

महिला-१ : बौआ, की अही दिनला तोरा पर आशा कैने छली ?

युवक-१ : (जेना किछु ज्ञात नहि हो) माय, एना कैला वजै छे । की भेलैए ?

महिला-१ : बाप कहै छलौ - तो कहादुन गौछली मे ओंघरायल रही

युवक - १ क चेहरा पर जेना डर देखि पडैछ ।

मारे डटैत रहे हमरा ।

युवाक १ : माय ।

महिला-१ : (बात के लोकैत) पहिने ई कह, ठीके तो दारु पीब कS ओंघरायल रही ?

युवक-१ : ओंघरायल त रही, मुदा दारु पी कS नै ।

महिला-१ : (तनिक रोष सँ) झूठ बजै छे । तो आब दारु पीब लागल छे ।

युवक-१ : माय, हम तोरा स झूठ नै बाजि सकैछी । हमरा पर विश्वास कर ।

महिला-१ : (कनेक चुप्पी) त तो भांगो किया पिले ?

युवक - १ किछु नै बजैछ ।

तो जनै छही । एहि खनदानमे खैनी जर्दा खायबला कोइ नै है ।

युवक - १ पुन : किछुने बजैछ ।

पता छौ, तोरा बापके कतेक दुख भेल छौ ।ओकरा त लोक दारु के नाम कहिदेने छै ।

युवक-१ : ई हमर संगतिके कारणे भेल होतै ।

महिला-१ : संगत के कारणे ?

युवक-१ : हं माय । हमर संगी सभ दारु पीबै छै, गाजा पीबै छै । चरस - हफीम सब खाइ है ।

महिला-१ : तोहुँ खाइते हयबे ?

युवक-१ : सेहे त कहै छियौ । लोक ओकरा संगे बैसल - उठल देखै है त एहिना बुझि लैहै ।

महिला-१ : तखन ओकरा सभके संगत छोडि दे ।

युवक - १ चुप्प अछि ।

जै संगतमे रहने नीकके बजाय बेजाय होए तकरा तेज देबके चाही ।

युवक-१ : तखन जाउ कत्त ? सभ त काम - धाम करैए । जेना तेना पाइ कमाइए । ओकरा सभके बीचमे वैसलास त आओर दुख होइअ ।

महिला १ : नैयो ।

युवक-१ : नैयो की । हम संगते मे छी त की ओकर लत सभ पोसने छी । उ अपना लS कS हम अपना लS कS ।

महिला-१ : (अविवूवास स) त ठीके तो एम्हर ओम्हर ..... ।

युवक-१ : हमरा पर विश्वास कर माय । हम कोनो लत नै पोसने छी । (चुप्पी) आइ आठ वरीस स अफिसे - अफिसे आ दोकाने - गदीए घुमैत घुमैत थाकि जरुर गेल छी ।

महिला-१ : वौआ ।

युवक-१ : हँ, माय । हम थाकि गेल छी । बूढ वापक पेन्सन पर ई घून लागल जुवान देह पालबा पर विवश छी ।

खटिया सँ उठि जाइछ ।

आदर्श, इमान आ धर्मक पालन करबाक गुण हमरा विरासन मे मिलल अछि ने । न सहबाक क्षमतो ओत्तहि सँ भेटल अछि ।

आकाशमे नजरि टिका ।

हम बहुत किछु सहि सकैछी माय, मुदा अपन घुन लागन जुवानीक पीडा नै सहल जाइए ।

महिला-१ : (उठैत आ युवक १ के सम्हारैत) ई की बजैत छे वौआ । आइ नै काल्हि त काज भेटबे करतै । निराशक कोन बात छै । (चुप्पी) चल कलौ खाले ।

तावत घरक पछौत सँ पुरुष - २ क आवाज सुनि पडैछ ।

पुरुष-२ : (पार्श्वसं) गणेशी छै रौ । गणेशी ?

महिला - १ सम्हरिकS माथ पर नुआ धS लैछ ।

महिला-१ : (युवक - १ सँ) लगैछै - फेर महाजन आबि गेलै ।

युवक-१ : ई एना बेर - बेर कैला अबै है ?

महिला-१ : कहै है, तमसुक बदलि देबले । महाँदन समय पुरि गेल है । नै त रुपैया देव ला ।

युवक-१ : तखन ?

महिला-१ : आब जे तमसुक बदल कहै है ओइमे मुर - सुद लगाकS चारि - पाँच दोबर भ' जएतै । कहाँ स देतै तोहर बाप ।

युवक-१ : ओह ।

पुरुष - २ आंगनके मुहथरि पर आबि जाइछ । संगमे मुँह लग्गु नोकर पुरुष - ३ सेहो रहैछ ।

पुरुष-३ : (हाथक लाठी के चमकबैत) की रे अशोकवा । बाप कत गेलौ ?

युवक - १ गुम्हरिकS पुरुष - ३ दिश तकैछ । पुरुष - ३ कनेक नर्मस भ जाइछ । मालिक दिश पलटि अबैछ ।

पुरुष-३ : मालिक, लगैए गणेशी की नामस नै है ।

पुरुष-२ : (नोकरके टारैत) की रे अशोकवा । गणेशी कत गेलौ ?

युवक-१ : (उठिकS) एखन त नै छथि ।

पुरुष-२ : कत्त' गेलौ ?

युवक-१ : हमरा नै बूझल है ।

पुरुष-३ : (कनेक जोरसँ) त् तोहर की नामस् माइके बूझल होतौ ?

युवक - १ फेर ओकरा दिश गुम्हरिकS तकैछ । ओ मुँह चमकवैत मालिकके पाछा चलि जाइछ ।

पुरुष-२ : देख, तमसुक बदलाब के अगिलका रविके अन्तिम दिन है । एहि बीचमे रुपैया देब कही कि तमसुक बदलाब कही ।

पुरुष-३ : (फेर आगा बढि) नहि त की नाम स घर घराडी स हाथ धोव कहि दही । (मालिक दिश ताकि) की नामस नै औ मालिक ?

युवक - १ किछु नै बजैछ ।

पुरुष-२ : (जाइत - जाइत) एखन त हम जाइछी । फेर सुगवा अबैन रहतौ ।

पुरुष-३ : (पलटि कS) हम भकमच्छर की नामस छोरा देबै मालिक, देखियौ ने केना नै देअ । की नामसँ ।

दुनूक प्रस्थान । युवक - १ आंगन मे टहलS लगैछ । महिला - १ घर सँ बहार होइत अछि आ एकटक्क युवक - १ क अनुहार देखैत रहैछ ।

अन्हार

* * *

दृश्य - ३

दृश्य पूर्ववत् । आंगनमे खुरसी पर पुरुष १ बैसल चिन्तामग्न । निचांमे महिला १ सेहो चिन्ताग्रस्त वैसल । लगैछ जेना कोनो बात होइत होइत गम्भीर विन्दु पर अटकि गेल हो ।

महिला-१ : आब त कोनो तरहे महाजन के ऋण फरिछा देब पडतै ।

पुरुष-१ : सेहे त अहुँ बुभिते छिऐ । कहुने, कत स फरिछएबै ?

महिला-१ : बेच लिअ धूर धूरकS जमीन । कहुना सधा दिवौ करजा ।

पुरुष-१ : हमरा त लगैए, धुर - धुर कS बेचियो कS सधा पएबै कि नै तै मे शंके है ।

महिला-१ : जएह सधै । बाद मे कोनो जोगार करबै ।

पुरुष-१ : (उठिकS) कह मे बड सहज लगैछै अशोकक माय, जुटब' पडैछै तखन बुझ मे अबै है ।

महिला-१ : काल्हि धमकी द कSमहाजन चलि गेलै । साफ कहै जे घर-घराडी स हाथ धोब पडतै ।

पुरुष-१ : सभ लिखल है । उ चाहे त कS सकैअ ।

महिला-१ : आ रहबै कत ? धीआ पूता ?

पुरुष - १ चुप्प भ जाइछ ।

बेर - बेर कर्जा चुकब ला धमकी द कSजायब, लगै है बोआ के आब नीक नै लगै है । पता नै ओ की कS बैसत ।

पुरुष-१ : (अगुताकS) की कS लेतै ? ऋण सधा देतै ?

महिला-१ : ऋण त नहि सधाओत मुदा किछु अनर्थ धरि अबश्य कS लेत ।

पुरुष-१ : माने ?

महिला-१ : माने त साफ ओकर आखिमे भलकैत हम देखलिऐ ।

पुरुष-१ : कनि फरिछाउ नै ।

महिला-१ : महाजन संगे कतौ भगडा नै कS बैसय ।

पुरुष-१ : ओह । ई भ सकैछै ।

महिला-१ : तखन केना हयत ? और मुश्किल कS देत चण्डलवा ।

पुरुष-१ : ई बात त अहाँ अपन दुलरुवाके समझवियौ । जकर धारने रहै है तकर बातो त सही परै है ।

महिला-१ : आ अपने बुझेबै से नै होतै ?

पुरुष-१ : पहिने अहाँ बुझवियौ नै ।

महिला-१ : ठीक छै । मुदा ऋण त चुकाबही पडत नै ।

पुरुष-१ : से त कोनो जोगाड लगाबही पडत । (चुप्पी) अच्छा हम कनेक शहर भेने अबैछी । आब मे देरियो भ सकैछ ।

पुरुष - १ क प्रस्थान । ताबत पुरुष - ३ क प्रवेश । ओहिना लाठी चमकबैत सरासर आंगनमे प्रवेश करैत अछि ।

पुरुष-३ : की हो गणेशी, हमरा देखिते घरमे नुका रहला की ?

महिला-१ : एह, की वाजल जाइ छै । ओ त एखने शहर दिश गेला ।

पुरुष-३ : नै, ई नै भ सकैछै । अपन चसम स हम अंगनामे ढुकैत देखने छली ।

महिला-१ : से हम कहाँ कहैछी, नै आयल छल । एखने वहराएल ग ।

पुरुष-३ : त की भेलै कर्जा के । देबै कि तमसुक बदलेबै ।

महिला-१ : बुझाइए तहीला शहर गेल । देखू कुछो त सोचबे करतै ।

पुरुष-३ : आब सोचला तोचलास काम नै चलतै । एक हाथ लेना, एक हाथ देना ।

महिला-१ : हम की द सकैछी । घर त सुन्ने है । अन्नो पानी नहिए है ।

पुरुष-३ : (एम्हर ओम्हर चकुआइत) अशोको नै है ?

महिला-१ : अशोक त खा - पीकऽ बाद दिश निकलल छै । साँझ स पहिने की आओत ।

पुरुष - ३ कनेक सहटि क आगनमे महिला - १ लग खाट पर जा बैसि रहैछ ।

पुरुष-३ : देखू, मालिक बड चण्डाल है । ऊ नै छोडत । कहलकैअ, आइ जेना होतै, जे होइ लक कऽ अइहे ।

महिला-१ : (खुशामद करैत) हे, मालिकके चीत नै बुझा सकै छिऐ । हमर दुख त देखिते छी ।

पुरुष-३ : (पुन : चकुआइत) बाप रे बाप । मालिक के चित के बुझौत । उत त सौंसे जीने खा लेतै ।

महिला-१ : हे, अहुँ त हमरे सन लोक छी किनै । गरीबक दुख नै बुझवै ?

पुरुष-३ : बुझवै । जरुर बुझवै । पहिने अहुँके हमर दुख बुझ पडत ।

महिला-१ : हे भगवान । हमरा सन नीच अधमसँ अहाँ के कोन दुख दुर होत गोराइत साहेव ।

पुरुष-३ : ककरा स नै ककर दुख दुर होइ छै अशोकक माय । अहुँ चाही त ..... ।

महिला-१ : से कहु ने, हम की करु । हमरा स होत त करबे करब की ?

पुरुष-३ : (कनेक आर लगमे सहटि) अहाँ चाही तँ हम मालिक के नीचां - उपर कहि समय बढवा सकैछी ।

महिला-१ : (उत्सुकता सँ) केना ?

पुरुष-३ : (महिला - १ क हाथ पकडि उठबैत) सुनु, कनी बकरी घर दिश चलु नै ।

महिला-१ : (तानि कऽ हाथ छोडबैत) किएक ?

पुरुष-३ बड भोला छी अहाँ । आउ नै एहि एकान्त मे हमरा संग एक रती ..... ।

महिला-१ : (उतेजित भ') चुप्प गुण्डा । तो हमरा बजारु बुझि लेने छे ।

पुरुष-३ : एक्के रतीके बात छै । फेर ऋणो जल्दी नहि चुकब पडत नै ।

महिला-१ : चाहे हमरा तीनू माय पूतेक हड्डी हड्डी विका जाइक, हम ओइ चण्डलबाके पाइ - पाइक' चुकादेबै । मुदा तोरा सन पापीके देहमे भीडब ?

पुरुष-३ : बेसी हल्लो नै करु । बदनामी अहीक होत । आउ चलु जल्दी ।

पुरुष - ३ महिला - १ के जवरदस्ती भरि पांजकऽ पकडि बकरी घर दिश लऽ जाए चाहैत अछि, किछु डेग बढैछै कि युवक - १ क आगमन आगनमे होइछै आ पछेसं पकडि पुरुष - ३ के अपना दिश घीचि एक मुक्का मुहँ पर मारैत छैक । ओ सोझे उनटि क आंगनमे खसि पडैछ । तकरा बाद, किछु काल खूब धुनाई करैछ । कहुना अपन जान बचा पुरुष ३ - भागि जाइछ । युवक - १ खुरसीपर बैसि रहैछ । महिला - १ ओसारापर जा वैसकऽ कान लगैछ । कनेक काल एहने स्थिति रहैत छैक ।

युवक-१ : (अपन स्थान सँ उठैत) माय चुप रह । आब ई राक्षस सभ अइ अवस्था तक बढि गेल अछि ।

महिला - १ एखनो हिचकैत रहैछ ।

अन्याय, अत्याचारक एकटा सीमा होइछै । हमसभ ऋण खएने छी, वहिया त नहि लिखने छीऐ । आब देखही की होतै ।

महिला - १ अश्रुपुरित आँखिसँ बेटा दिश तकैछ ।

साचे कहै छियौ माय, बड महग पडतै महजनमा के ई नोर ।

महिला-१ : वौआ ।

युवक-१ : आब हम ककरो नै सुनवौ । इमान, धर्म बचाकऽ रहके माने ई नै होइछै जे अत्याचारो के चुपचाप सहैत रही ।

महिला-१ : वो सम्पन्न लोक है । तौं एक्को रती ओकरा आगा मे टीक नै सकबही । राता रात गुण्डा ल जएतौ आ मारिकऽ फेक देतो ।

युवक-१ : न जानके डरस हम अपन माय के इज्जत लुटैत देखैत रही, अपन बाप के अपमान होइत देखैत रही । नहि माय आब हम नहि देखबौ ई सभ ।

युवक - १ तेजीसँ आंगनसँ वहरा जाइछ । महिला - १ वौआ वौआ चिचिआइत रहि जाइत छैक । महिला - १ हारिकऽ गोनैर पर वैसि कानय लगैछ । तावत पुरुष - १ क आगमन । महिला - १ के कनैत देखि झटकारिकऽ लग मे जाइछ ।

पुरुष-१ : कीभेल, कनै किएक छी ?

महिला - १ चुप्प अछि ।

बाजू नै की बात भ गेल ? अशोकवा किछु कहलक की ?

महिला-१ : पहिने अशोकवा के रोकु ।

पुरुष-१ : की भेलै अशोकवा के ?

महिला-१ : ओ पीते थर थर कपैत महाजनके घर दिश गेल ग । किछु अनर्थ आइ कइए लेत ।

पुरुष-१ : बात त किछ बताउ ।

महिला-१ : नै, एखन बात सुनके समय नै है । पहिने ओकरा शांत करु तखन कोनो बात हयतै ।

पुरुष - १ झटकारिकऽ आगन सँ वहरा जाइछ ।

अन्हार

* * *

दृश्य - ४

स्थान पूवर्वत् । सांझक समय । ओसारा परक दीयठि पर दीआ राखल । आंगनमे राखल खाटपर पुरुष - १ आ महिला - १ वैसल । बातचितक क्रम चलैत सन ।

महिला-२ : केना रुकल त ।

पुरुष-१ : ठीके बड बेजाय भ जइतै । रामेसर कहैत रहे, कतबो रोकलिऐ त नै रुकल, सन सनाईत डयोढी दिश बढैत चलि गेल ।

महिला-१ : फेर ?

पुरुष-१ : फेर की ! डयोढी दिश स कहादन महाजन के छोटकी बेटी लक्ष्मी अवैत रहै सेहे रोकि लेलकै ।

महिला-१ : (उत्सुकतासँ) लक्ष्मी रोकि लेलकै । बात बुझलिऐ नै ।

पुरुष-१ : हँ, गोरैनबा कहादन डयोढीमे जाक मालिक्के उनटा सुनटा बात पढबैत रहैं से बात' लक्ष्मी सुनलकै । सेहे बात कह अशोकके तकैत अबैत रहै ।

महिला-१ : अशोकक बाबू । हमरा त कुछो नै घुसैअ माथा मे ।

पुरुष-१ : वास्तवमे अहां के घुसहु वला बात नै है । हमरा अहा के वेरमे एना होइतो कहां छलै ।

महिला-१ : ठीके, लक्ष्मी अशोक के कैला तकतै, कैला कहतै अपन बापके बात ।

पुरुष-१ : (किछु मुस्किआ कऽ) एकरा पछामे कोनो बात छै ।

महिला-१ : हे, आब हमरा माथा फटि जायत । जल्दी कहुने ।

पुरुष-१ : अहाँ पतिअएबै ?

महिला-१ : एहन कौन बात छै जे हम नै पतिअएबै ?

पुरुष-१ : छै, तेहने बात ।

महिला-१ : पहेली नै बुझाउ, बाजु झट द ।

पुरुष-१ : किछु दिनस सुनै छी, कहादुन अहाँ के दुलरवा लक्ष्मी सँगे फँसल हबे ।

महिला-१ : फेर झूठ । बाप रे । हमरा सभके अइ गामके लोक जीअ नै देत ।

पुरुष-१ : कहली नै । अहाँ पतिअएबे नै करबै ।

महिला-१ : पतिआए बला बात रहै तब नै पतिआउ ।

पुरुष-१ : त नै पतिआउ ।

महिला-१ : (चुप्पी) लेकिन ई उडौलक के ?

पुरुष-१ : के उराओत । बात सााच छै ।

महिला-१ : अहाँ केना वुझलिऐ ।

पुरुष-१ : अही घटनासँ ।

महिला-१ : कोन घटना सँ ।

पुरुष-१ : रे ओहे रोक बला घटना स । एक त अपन बाप के बात कहला अशोकबा लग कैला अइतै दोमस अएबो कैले त ओतेक पितायल अशोक ब्रटेमे स घुरि केना जइतै ।

महिला-१ : हे हर्शोक के बाबू ।

पुरुष-१ : बाजू ने ।

महिला-१ : वात कुछो वुझाइ है ।

पुरुष-१ : कुछो नै सोलहो अना साँच है ।

महिला-१ : तखन त ई आरो आफत भ जएतै । ठीके कहै छल गोरैनबा ।

पुरुष-१ : की कहैत छल ?

महिला-१ : कहै छल जे एगो वात एहन जनै है जे मालिक के कहि दैाक त अइ घरमे आगि लागा देतै ।

पुरुष-१ : ठीके इहे बात होतै ।

महिला-१ : हम की कहु । वेटे - कुवेटा भऽ गेल है । नीक - वेजाय किछु ने सोचै है ।

महिला-१ : एहनमे नीक वेजायके खिआल रहबो नै करै है किनै ।

पुरुष-१ : अहाँ केना जनलिऐ से ?

पहिला-१ : की हम गाम-समाजमे नै रहै छी से ।

दुनुक सम्मिलित हँसी ।

नै, बजलिऐ । आब की होतै ?

पुरुष-१ : की होतै । जे आगि लगौलकैअ सेहे बुझएतै ।

महिला-१ : गे दाई गे दाई । हमर बेटा नाहक मे मारल जाएत ।

पुरुष-१ : है सुतु ग जाउ । नाहक माथ खराब नै करु । जे उमेर नीक वेजाय सोच के दिमाग नै दै छै सेहे तकर परिणाम भोग के शक्तियो देतै की ।

महिला - १ उठैत अछि ।

महिला-१ : अहाँ के वीछौना गोठ घरमे कऽ देने छी । खाटपर आइ वौआ सुततै । कहने छल अँगने मे सुतब ।

पुरुष-१ : (उठैत) ठीक छै । हम जाइ छी ओतहि ।

दुनु गोटेके दुनु दिश प्रस्थान । महिला - १ घरमे चल जाइछ । तकरा वाद युवक - १ के आगमन । आँगनमे राखल खाटपर चादर ओढि सुति रहैछ । कनेक काल मद्धिम लाल्टेनक रोशनी मे रातुक वातावरण । एकटा महिला आकृति आँगनमे प्रवेश करैछ । हाथ मे एकटा पोटरी धयने । युवक - १ क लग जाकऽ ठाढ भ' जाइछ । आकृति चकुआइत अछि । फेर आश्वस्त भ' जाइछ ।

आकृति : (युवक - १ के गर जातिकऽ उठवैत) अशोक ।

युवक - १ चुप्प । फोफ कटैत ।

(कनेक जोरसँ) अशोक जी !

युवक - १ धरफराकऽ उठि वैसैत अछि 'के छी 'कहबा' लेल जोर सँ बाज' चाहैत अछि कि आकृति अपन वाम हाथ युबक - १ क मुँहपर ध दैछ । चुप्प रहबाक सँकेत करैछ । युवक - १ आकृति के चिन्ह लैत छैक ।

युवक-१ : (आश्चर्य सँ) अरे, लक्ष्मी ।
महिला-१ : (गर जाँति) हँ हम ।
युवक-१ : (सम्हरिकS बैसैत) वाप रे, एतेक रातिकS । लोक देखत त की कहत ?
महिला-२ : लोक देखत तखन ने किछु कहत ।
युवक-१ : अच्छा, कहु अहाँ किए अएलहुँ । सव ठीक अछि ने ।
महिला-२ : हँ, सब ठीक अछि ।
युवक-१ : एतेक रातिकS एना अएवाक की मतलव ?
महिला - २ चुप्प अछि ।
बाजु ने, कैला अइलीग एतेक राति कS ।
महिला-२ : अशोक ।
युवक-१ : कहु ।
महिला-२ : आइ जाहि उतेजनामे अहाँ हमर घर दिश जाइत छलहुं । जँ बाबू सँ मुठभेड भ जाइत तँ ओकर परिणाम बुझल अछि, की होइत ?
युवक-१ : मुठभेर कयनिहार परिणामके डर नै करैअ ।
महिला-२ : नैओ ।
युवक-१ : हँ, दुनुमेस कोइ एक गोटेके जान अवस्से जाइत ।
महिला-२ : तखन कहु एहिसँ अहाँके न्याय भेटैत ?
युवक-१ : मनके सँतोष त होइत ।
महिला-२ : नहि, अशोक नहि । अन्याय, अन्याचारक विरुद्ध लडबाक जे उर्जा अहाँ मे अछि । नकरा एना वर्वाद अहाँ नै कS सकैछी ।
युवक-१ : माने ?
महिला-२ : माने साफ अछि । जे लडाइ अहाँ लड चाहैछी, ताहि लेल अहाँक नेतृत्वके जरुरति छै समाज के । एक्के मुठभेडमे अपन सभ किछु समाप्त कS देबाक अहाँक कोनो अधिकार नहि अछि ।
युवक-१ : लक्ष्मी ई अहाँ की कहैछी ?
महिला-२ : हम ठीके कहैछी अशोक । अहाँके सँगठित भ लड पडत ।
युवक-१ : के आओत एहि लडाईमे हमरा सँग ?
महिला - २ चुप्प अछि ।
बाब्रू रणधीर सिह सन अत्याचारी शोषकक विरुद्ध आवाज उठैबाक साहस के करत ?
महिला - २ एखनो चुप्प अछि ।
ककरा छै एहि गाम सँ पडएबाक, घर-घराडी लिलामी पर चढएबाक ? लक्ष्मी, देत केओ सँग हमरा ?
महिला-२ : (गम्भीर होईत) हँ, अशोक, जरुर देत ।
युवक-१ : के ?
महिला-२ : (दीर्घ निसाँसक सँग) हम ।
युवक-१ : (साश्चर्य) अहाँ ?

महिला-२ : हँ, हम अहाँके सँग देव ।
युवक-१ : ई जनैत जे रणधीर सिँह अहाँक बाप केहन क्रूर अछि ?
महिला-२ : नएँ ने हम साथ देब । कारण अत्याचार आ शोषणक खेल हम अपना सोझा नीक जकाँ देखने छी ।
युवक - १ खटिआसँ उठि टहल' लगैछ ।
आ ताहीसँ एहि लडाईमे अहाँ के साथ देब' हम अएलहुँ अछि ।
युवक - १ ओहिना टहलि रहल अछि । भितरमे अन्तरब्द चलि रहल छैक से बात व्यवहार स बुझि पडैछ ।
की अहाँके हमर सहयोग नहि चाही ?
युवक-१ : (ठमकि) अवश्य चाही, लक्ष्मी ! अहाँक सँगत हमरा लेल प्रेरणाक काज करत, शक्तिक काज करत ।
महिला-१ : (हाथक मोटरी आगाँ बढबैत) तँ, लिअ ई छोटछीन उपहार ।
युवक-१ : (आश्चर्य सँ) ई की अछि ?
महिला-२ : एहि पोटरीमे हमर गहना सभ अछि ।
युवक-१ : (आओर आश्चर्य मिश्रित स्वरमे) गहना कोन काम देत ?
महिला-२ : एकरा बेचिकS सभसँ पहिने अपन कर्जा चुकाउ ।
युवक - १ अबाक भS मुँह तकैत रहि जाइछ ।
जखन ऋण चुकि जायत तखने मर्द जकाँ लडबामे आत्म सम्मान बढत । कर्जा त लोकके नोंडि दैत छैक, कमजोर कS दैत छैक ।
युवक-१ : नहि, कर्जा चुकौनाइ हमर निजी मामिला है । हम चुकायब चाहे घर - घराडी लिलाम करायब । एहिमे अहाँक सहयोगक जरुरति नै है ।
महिला-२ : एही ठाम अहाँ विसरि जाइछी । एकर जरुरति अछि अहाँके ।
युवक-१ : नहि लक्ष्मी । हमरा कथीके जरुरत है । कयीके नै नै मे अहाँ नै परु । घीया पुता बला गप छोडू, ई सभ उठाकS चलि जाउ । ज वाप बूझत त खण्ड - खण्ड कS काटि देत ।
महिला-२ : अहाँ वापक डर देखा हमरा कर्तव्य सँ च्यूत कर चाहैत छी ? जखन सँग लेवाक बचन देलहुँ अछि त हमर ई उपहार स्वीकार कर पडत ।
युवक-१ : कोनो हालतमे नहि । ई अहाँक उपहार हमरा वड महग पडत । हम जिनगी भरिक लेल अहाँक गुलाम बन नै चाहैछी ।
महिला - २ चुप्प अछि ।
ककरो देल भीखक जोड पर हम लडाइके जारी नहि राखि सकब ।
महिला-२ : त सुनु : हमर एकटा बात मानब ?
युवक - १ प्रश्नवाचक नजरि सँ देखैत अछि ।
अहाँ हमरा वरण कS लिअ ।
युवक-१ : (आश्चर्यसं) की ।
महिला-२ : हँ, अहाँक सँग प्रणय सूत्रमे वन्हि जएने वेसी प्रतिबद्धतापूर्वक अहाँके सँग द सकब ।
युवक - १ निर्मिमेष एकटक मुहँ निहारैत खडा अछि ।

आ जखन हम अहाँक भ' जायब त ई गहनामे आन आ अप्पनक झँझटे समाप्त भ जएतै ।

युवक - १ एखनो ओहिना ठाढ अछि ।

बाजू, की मँजुर अछि हमर प्रस्ताव ?

युवक-१ : (पीडा सँ) लक्ष्मी, राति बड भ' गेलै । लगै अहाँ पर दिनका बदहवासी कायम अछि । बाप - माय सूतल छथि । ओ जागथि आ अहाँके आँगनसँ जबरदस्ती बहार कऽ देथि ताहिसँ पूर्वे अहाँ गहना उठाकऽ चल जाउ ।

महिला-२ : त ई अहाँक अटल निर्णय अछि ?

युवक-१ : हँ, हँ, हँ । अहाँ जतेक जल्दी भ सकय चल जाउ ।

महिला-२ : तँ ठीक छै । हम जाइछी । मुदा सुनि लिअ । (जोर दैत) अहाँके हमर जरुरति अछि, आ हम सदिखन सँग पुरबा लेल अहाँक वजाहटिक प्रतिक्षा करैत रहब ।

हिचुकैत महिला - २ क प्रस्थान । युवक - १ ओहिना कनेक काल टहलैत थच्च द खटिया पर बैसि जाइछ । दुनु हाथें माथ पकडि लैछ ।

अन्हार

* * *

दृश्य - ५

स्थान पूर्ववत् । मध्यान्हक समय । खुरसी पर बैसल युवक - १ चिंतित मुद्रा मे देखि पडैछ । खुरसी स उठि टहल लगैछ । उबिग्नता स्पष्ट देखि पडैछ ।

तावत युवक - २ क प्रवेश 'गोघिया ?' कस्वरक सँग । ओकरा देखिते जेना युवक - १ क आखि चमकि उठैछ । 'भाई' कहि एकाएक उत्साहित होइछ, फेर जेना किछु सोचि चुप्प भ' जाइछ । युवक - २ ठाढे ठाढे एकटक्क युवक - १ क अनुहार देख' लगैछ ।

युवक-२ : की बात छै गोघिआँ । वड उदास देखै छियौ ?

युवक-१ : नै, किछु नै है ।

युवक-२ : (खटियाके घीचैत) नै रे, किछो हौ जरुर ।

युवक-१ : (खुरसी पर बैसैत) तो न अहिना बाल के खाल निकाल लगै छे ।

युवक-२ : हम मानबौ केना । तोरा सन चचल लोक आइ एक सप्ताहस उखडल उखडल लगैछे, बात त जरुर कुछो होतौ ।

युवक - १ चुप्प अछि ।

काका, काकी कत छथुन्ह ?

युवक-१ : शहर गेल छथि । साँझ तक घुमथीन ।

युवक-२ : (चहकि) एह, तब त ठीक है ।

युवक-१ : कथीला ?

युवक-२ : गप्प करला ।

युवक-१ : (मुस्किया) दुनु चुनिया । हम त कहलियौ कोनो गभीर बात छौ ।

युवक-२ : ई गभीर बात नै भेलै, जे आइ बहुते दिनपर दुनु भाई दुख सुखके वात वतिआयव फैलस । विना ककरो टोका टोकी के ।

युवक-१ : की गप करबे । कहाँहै कोनो तेहन बात ।

युवक-२ : छै कि ।

युवक-१ : जेना ?

युवक-२ : जेना आब हमरा सबके सँगठन बनाब के बात । आइ कय दिनस चलि रहल है ।

युवक - १ चुप्प अछि ।

गौघिया, जा धरि हम सब गाममे अगाडी नै बढविही ता धरि कोनो छौडा के डेग नै ससरतै ।

युवक-१ : सेत छे, लेकिन हम सब करबै की ?

युवक-२ : फेर उहे बात । तोरा कय दिन स कहै छियौ वुढबा सवके बात के आव छनिअैला स काम नै चलतौ । फाड बान्ह आ मैदानमे कुद ।

युवक-१ : फेर त माता - पिता ..... ।

युवक-२ : माता पिता के अपमान नै करी । नहिना कोइ करैत रहे त देखबो नै करी ।

युवक - १ चुप्प अछि ।

आइ गौघिया, तोरे माता पिता मात्र अन्याचारी महाजन सँ अपमानित नै होइ छथून्ह । सौंसे गामक प्रतिष्ठा आइ महाजनके छडीके नोकपर नचैत खसैत छै ।

युवक-१ : चुप्पे अछि ।

ई क्रम कनेक दिन ? की अइला चुप रहल जाए जे हमर तोहर वाप माय ओकर कर्जा खयने है । आ एक के दश बूझा जीवन भर गुलामी करैत रहे ?

युवक - १ उठि जाइछ आ टहल लगैछ ।

हमरे तोरे साथी सभ एहिना गार्जियनसँ उपेक्षित भ शहरमे कोन लतमे पडि गेल अछि नै हो पता ? की तो चाहै छे जेहो वचल खुचल सव छी ओहिना आक्रोश के मारैत आयोडेक्स आ युरिया खाद खा - खा क मरैत रही पल पल ?

युवक-१ : रास्ता की छै भाई ?

युवक-२ : साफ बात छै, विद्रोह ।

युवक-१ : केहन ?

युवक-२ : बाप - मायक परम्परागत मान्यना आ विश्वासक विरुद्ध, शोषण आ अन्याचार कैनिहार महाजन सन नर्सशक विरुद्ध ।

युवक-१ : हमरा त ई सोचिते अपन वापक निरिह थाकल चेहरा लगमे नाचि जाइअ । वटाक कोनो गलती सुनवा लेल किन्हहुँ तैयार नै होइत माय । भाई ...... ।

युवक-१ फेर खुरसी पर वैसि जाइछ ।

युवक-२ : ई मोह त तोड' पडतौ ।

युवक-१ : लेकिन केना ? तो चाहै छे हम विद्रोहमे वहरा जाइ आ एम्हर माय - वाप के जुतिअबैत महाजन घरस निकालि देक ।

युवक-२ : ओकर एतेक हिम्मत .... ।

युवक-१ : हिम्मत त छै । हमर पुरा परिवार ओकर कर्जामे डुवल छै भाइ । तो नै वुझविही ।

युवक-२ : वुझल त है । लेकिन ... ।

युवक-१ : लेकिन की ? कोन आशा है मुक्ति के ? हम चुका सकबै कर्जा ?

युवक - २ चुप्प अछि ।
बाज, कतस लयबै ओतेक रुपैया । की चोरी करु, ककरो घर लुटु ? अथवा स्मगलिंग करु ? की करु, वता ने ।

युवक-२ : वाप माय कर्जा चुका नै सकतौ, तोरा सँगमे कोनो उपाय नै छौ । आ जा धरि तोहर कर्जा नै उतरतौ ताधरि तो आगा आब ने चाहबे । कठिन छै परिस्थिति ।

युवक-१ : तैस ने कहै छियौ । महाजनी अन्हारक विरुद्ध सँघर्षमे उतरि जएबाक मोन हमरो होइए, मुदा ई निर्दोष अनुहार पएर मे सींकडी बान्हि देने है ।

युवक-२ : लगैछौ, हमरा सबके एहिना रह पडतौ ।

युवक-१ : (गौर स युवक - २ क चेहरा देखैत) एकटा उपाय है ।

युवक-२ : (चौंकि) अँए । कोन उपाय रे ।

युवक-१ : (कतौ दुर देखैत) महाजनक वेटी लक्ष्मी स हम विवाहकऽली ।

युवक-२ : (चिहुकि क') गौघिआँ ।

युवक-१ : हँ, हम ठीकें कहै छियौ ।

युवक-२ : भाई, गरिबीमे सपना वड नीक लगैछै ।

युवक-१ : मुदा ई सपना नै है ।

युवक-२ : वाप रे, ई संभव छै भाई ।

युवक-१ : नीक जकाँ संभव छै ।

युवक-२ : त अइमे देरी कैला ?

युवक-१ : (ओहिना गंभीर मुद्रामे) हम नै चाहैछी ।

युवक-२ :ञ (आश्चर्यसं) की माने ?

युवक-१ : ई प्रस्ताव लक्ष्मीएके है ।

युवक-२ : (लगंभग कुदैत भरि पाँजकऽ युवक - १ के पकडि) तोरा कोन सिद्धान्त बीचमे आवि गेलौ ।

युवक-१ : इहे जे बाप - माय की कहथिन, समाज की कहत । फेर महाजनो और पिशाच भ लागि जयतै ।

युवक-२ : चुप्प ! एकटा सुन्दर मौका आवि रहल छौ त फेर बाप - माय आ समाज सुझ लगलौ । जे इजोत अन्हार स लडबाक हेतु स्वयं तोरा घर तक आबि गेल छौ तकरा तो ठुकराब चाहैछे, अन्हारक कैदी भ जीवन नरक बना देव चाहैछे ।
युवक - १ चुप्प अछि ।
आ रहल चण्डलवा महाजन, त भाई ओकरा स बदला लेब के अइस बेसी नीक मौका नै भेटतौ । चुकाले गोधियाँ ओइ सार स सभ बदला ।

युवक-१ : अइ अभियानमे समाज साथ देत ?

युवक-२ : के नै देतै । उँच नीच गरिब धनिकक बीच वटल अइ समाजमे तोरा सन पिचायल बहुतो जीव है जकरा तोहर ई निर्णय जान उसास करतै ।

युवक-१ : आ विद्रोह ।

युवक-२ : विद्रोहक नयाँ माहौल तैयार होएतै, एकटा प्रेरणा भेटतै । (कनेक कालक चुप्पी) मुदा की आब लक्ष्मी मानतौ ?

युवक-१ : ओत कहिकऽ गेल अछि - हमर जरुरति जहिया पडय बजालेब, हम सदैब प्रतिक्षारत भेटब ।

युवक-२ : वाह, देखही ओइ नारीके महानता, जकर निर्णय मात्र तो यदि स्वीकार क ले त पुरा नक्सा बदलि जएतै । (कनेक कालक चुप्पी) कह, लाउ बजाकऽ ओकरा !

युवक-१ : एखन, लोक देखत त की कहत ?

युवक-२ : दुत, हम अबैत रही त ओकरा इसकुल पर देखने छलिअइ, गल्लीए बाटे आबि जएतै दू मिनट कै त बात हे ।
युवक - १ किछु नै बजैत अछि ।
तो बैस, हम अखनुनिए अइली ।
युवक - २ क प्रस्थान । युवक - १ फेर उठिकऽ टहल लगैछ । दू चारि फेरा लगा खुरसी पर अगैठि जाइछ । ताबत लक्ष्मीक संग युवक - २ क प्रवेश । दुनू गोटे युवक- १ क आंखि मुनने चेहरा दुनूकात भ एक टक्क गौरसँ देखैत रहैछ ।

युवक-२ : गोधिया ?

युवक-१ : (चौकि क') अएं । की भेलौ (फेर लक्ष्मी पर नजरि पडैछ) ओह, लक्ष्मी ।

महिला-२ : (प्रशन्नतासं) अशोक, अहाँ बजौलहु की ?
युवक - १ माथ निहुरालैछ ।
हमरा बुझल छल, पतझडमे सुखायल गाछसँ हरियरी बेसी दिन अलगनै रहि सकैछ ।

युवक-१ : लक्ष्मी ।

महिला-२ : हँ अशोक । प्रत्येक कारी रातिके समाप्त करबाक लेल सुरुजके उगब ध्रुव सत्य थिक ।

युवक-१ : (आँखिमे नोर डबडबाकऽ) ई त हमर शौभाग्य अछि अशोक । हमर सानिध्यसं जँ अहाँक भितरमे जमल विद्रोहक नदी मे उफान आबिजाई आ ओ अन्याय - अत्याचारक वान्हके तोडि सकय तँ एहि स वेसी हमरा लेल और की भ सकैए । एहि प्रकाशयात्रामे हम अहाँक सदैब संग रहब ।

युवक-१ : हँ, लक्ष्मी । हमरा अहाँक साथ चाही, हमरा एकटा नयाँ शुरुवात करही पडत । (घीचकऽ छाती सँ लगबैत) आब कोनो शक्ति हमरा अहाँस अलग नै कऽ सकत ।
युवक - २ किछु आगा बढि देह परक गमछा सँ नोर पोछ लगैछ ।

* * *

दृश्य - ६

दृश्य पुर्ववत् । मध्यान्हक समय । आंगनमे खुरसी पर पुरुष - १ आ खटिया पर महिला - १ बैसल । गम्भीर मुद्रामे । पार्श्व सं "रौ गौधिया छे रै" स्वर सूनि पडैछ । दुनू परानी साकांक्ष भऽ जाइछ ।

पुरुष-१ : लगैए, कमल आबि रहल है । नीक मौका पर आयल है ।

महिला-१ : कैला ।

पुरुष-१ : ई अपन छौडा के सघनिया है नै । कहबै कनि सझबही ।

महिला-१ : की कैलकैअ वौआ जे समझौतै ?

पुरुष-१ : (खिसिआकऽ) फेर उहेबात । अहाँ चुप रहू । हमरा कह दिअ ।

ताबत युवक - २ आंगनमे प्रवेश करैछ ।

युवक-२ : (दुनूके एक्के सग प्रणाम करैत) गोर लगैछी कका - काकी ।

पुरुष-१, महिला-१ : (एक्के बेर) नीके जका रह ।

पुरुष-१ : आबह बैस ।

महिला - १ घरमे चल जाइछ ।

की कमल । केम्हर ?

युवक-२ : अशोक नै हबै की ?

पुरुष-१ : घरमे एक्को रती रहै है । पता नै, कत्त रहै है भरि दिन ।

युवक-२ : हुँ ।

पुरुष-१ : कमल ?

युवक-१ : जी, ककाजी !

पुरुष-१ : अशोक के समझबै नै छहक ?

युवक-२ : कथी के लेल ?

पुरुष-१ : इहे खराब संगत के लेल !

युवक-२ : की भेलैए से ?

पुरुष-१ : लोक कहैए पीहु - पाब लागल है । खराब लोक संगे घुमैत रहैय ।

युवक-२ : सब झुठ छै । हम अपने खराब सगतमे रही । अशोकके कारण सम्हरि गेल छी ।

पुरुष-१ : कय गोटे कहि चुकल है ।

युवक-२ : ककाजी । अहाँ सब ओइ जुग के लोक । कनिको नीच उपर के बात सुनैत छी त जीउ हुकुरद्दम होब लगै हबे । लेकिन बात किछुनै है ।

पुरुष-२ : गामके छौरा सबके हालत ठीक छै नै । देखलहो नै असेसर आ चलितरा मास्टरके बेटा शहरमे फेन्सीडील बोतल के बोतल पीब जाइहै । कहादन गरिगीट आ आयोडेक्स खाइ है । बाप रे !

युवक-२ : ओतबे काका, ओइ दिन त अपने हाथे नशाके सुइया भोकिकऽ सरयुग हजाम के बेटा वेहोश भ गेलै - अखनु अस्पताल मे है ।

पुरुष-१ : तहीस कहै छिअह किने । एकरो संगत नीक नै हे । जीउ भरिदिन अशोके पर टागल रहैअ ।

तावत चाहक संग महिला - १ क प्रवेश । दू कप चाहमे एक कप पुरुष - १ के आ १ कप युवक - २ के द ओतहि खाट पर बैसि जाइछ ।

युवक-२ : (चाहलैत) ककाजी । आइ समाजमे एहि तरहक जे अराजकता युवक सभमे अएलैए तकर कारण जनै छीऐ ?

पुरुष-१ : की ?

युवक-२ : बेरोजगारी, भौतिक सुख सुविधाक प्रतिस्पर्धा, गरिबी आ शोषणके विरुद्ध आवाज नै उठा सकबाक बाध्यता, मजबुरी ।

पुरुष-१ : मजबुरी किए ?

युवक-२ : अहासन - सन अपन लीखक फकीर बापक कारणे ।

पुरुष-१ : बात बुझली नै ?

युवक-२ : बात साफ छै । समाजक गतिक सग घीआ - पूताके अहां चल देबै नै । समाजमे एतेक शोषण, अत्याचार छै, तकरा विरुद्ध बाज चाहय त अहां सब अपन परम्परागत मान - सम्मानक ढाल ल कऽ आगा मे ठाड भ जाइछी । अनकर मुहक कौर छी - निकऽ महलमे किसुनकेर करैत शोषक के हड्डी चुर करबाक तैयारी होइत अछि त तकरा सामाजिक विखण्डनक नाम पर अहाँ वुर्जुग सभ रोकि दैत छिऐक ।

पुरुष-१ : त हम सभ अराजकता कोना होब दिऔ ?

युवक-२ : जे घोर अत्याचार करए से अराजकता नै, जे रोक चाहय ओ अराजकता भ गेलै ।

पुरुष-१ : एहि सँ लागू पदार्थ सेवनक की सम्बन्ध ? युवक विगडबाक कोन तालमेल ?

युवक-२ : बड गहीर छै ककाजी । एहने असमान अवस्थामे विद्रोह करबाक हेतु वातावरण गार्जियन नहिदैछ तखन भितरक ज्वाला के दबएबाक हेतु लोक नशा कर लगैए, अपनाके विसर' चाह' लगैए ।

पुरुष-१ : एकर उपाय ?

युवक-२ : ओकर अधिकार भेटौक, बस ।

महिला-१ : केहन अधिकार ?

युवक-२ : काकी, अपन मौलिक अधिकार । नोकरी करबाक हधिकार, पेट भरबाक अधिकार, समाजमे होइत अन्याय अत्याचारके विरुद्ध लडबाक अधिकार ।

महिला-१ : ई के देतै ?

युवक-२ : ई अहाँ सब माय बाप देबै । नेता देतै, सरकार देतै । सब उच्च पद पर कुंडली मारने सांप सभ देतै ।

पुरुष-१ : तोरा लगै छह देतै ।

युवक-२ : नहि देतै त विद्रोह होतै । आ एहि विद्रोहके तो सब संग दहक काका, संग दहक ।

युवक - २ उठि जाइछ ।

पुरुष-१ : एह, कन स कत्त बात धीचा गेलै । हम त अशोक के समझाव के बात कहने रहिअह नै ।

युवक-२ : (पुन : बैसैत) बात दुनू एक्के छैक ।

पुरुष-१ : ई एक्के कोना छैक हौ ?

युवक-२ : तो अशोक के अपन आदर्शक चक्कर सँ मुक्त कऽ दहक ।

पुरुष-१ : आइ पहेली कैला बुझब लागल छह हौ ?

युवक-२ : कका । ई पहेली नै है । जाहि अशोक पर गलत संगतक आरोप तौं लगवैत छहक ओ त तोरे इमानदारी आ मान - सम्मानक वन्दी भ कऽ रहि गेल छह । ओ त एहन स्फुलिग अछि जे मौका पबिते अन्याय - अत्याचार शोषणक सम्पूर्ण आन्हर शासन के जरा कऽ भस्म कऽ सकैत छैक मुदा ओकरा माथपर बापक आदर्शक भूत सवार छै । बापक कर्जा स लचरल महाजनी आतंकक सायाक भय सवार छै ।

पुरुष-१ : कमल, समाजमे रहबाक हेतु .... ।

युवक-२ : समाज मे रहबाक हेतु मर्द जकाँ जीब पडतै, ककरो क्रीतदास जकाँ नै । सम्मानक मर्यादा ता धरि रहैत छैक जा धरि ओ ककरो अहमके आहतकऽ नहि प्राप्त कयल जाइ । तकरा वाद त सूजल लडाई छै .... ।

युवक - २ उठि जाइछ ।

अच्छा कका हम एखन जाइछी । जाइत - जाइत एतबे कहब जे अशोक्क भितरमे उठैत आगिके आब नै दबबहो ।

युवक - २ क प्रस्थान । पुरुष - १ एकटक जाइत देखैत रहैछ ।

पुरुष-१ : (महिला २ सँ) अशोकक माय, ई कमल ठीक नै कहलक ?

महिला-१ : दुर हम की जान गेलिऐ बढका - बढका बात ! हम त एतबे जनै छिऐ हमर बेटा कोनो गलत नै करत ।

पुरुष-१ : (जेना दुर कतौ हेरायल) ठीके, लगाम मे ढील देब पडतै । जे हम सभ नै कऽ सकली, से करबाक लेल नयाँ पुश्ता कें रोकबाक की अधिकार अछि हमरा सभ के ?

(कनेक कालक चुप्पी)

खाली एकटा बात स हारै छी ।

महिला-१ : कथीस ?

पुरुष-१ : इहे जे, महाजन के कर्जा माथपर है, आगा पडिते बाइ नै ससरैअ ।

महिला-१ : उपायो की छैक ।

तावत् युवक - १ क प्रवेश ।

युवक-१ : (माय सँ) कथीक उपाय माय ?

महिला-१ : (उठैत) किछु नै ।

युवक-१ : नै, कुछो त जरुर है ।

पुरुष-१ : होतै कथी, महाजनके कर्जा ..... ।

युवक-१ : कर्जा, कर्जा, कर्जा । आखिर अइ घरमे कर्जा के छोडि दोसरो कोनो बात होइ छै ?

पुरुष-१ : दोसर होयबो की करौ । अइ घरक सभ सुख सेहन्ना त महाजन के खाता - पाता 'मे बन्न भ गेल है ।

युवक-१ : के कैलकै बन ?

पुरुष-१ : हम ! मुदा अपना ला नै ।

युवक-१ : हम बुझैछी - हमरा ला ने । हमरा पढाई लेल ई कर्जा बोकने हयब । मुदा हम पुछैछी, हमर एहि पढाईक कोन मतलब ? नै अहाँक कर्जे चुका सकैत अछि नै हम स्वतन्त्र भ तेहन शोषकके विरोध कऽ सकैछी । कहु, की भेल एहि कर्जाक फल ?

पुरुष - १ चुप्प अछि ।

आब ई कर्जा हम स्वय चुकायब ।

महिला-१, पुरुष-१ : (एक्के बेर) तों ।

युवक-१ : हँ हम । खाली तों सब चुपचाप रह ।

पुरुष-१ : (आशंकित होइत) नहि, तों चुकैबही कतस । जरुर कनौ किछु अनर्थ ..... ।

युवक-१ : (बात कटैत) कथमनि नहि । हम अनर्थ त नहिए करब । हँ, अहाँ सभक नजरिमे, समाजक नजरिमे ओ सभस पैघ अनर्थ कैला नै होइ ।

पुरुष-१ : (महिला - १ सँ) सुनै छी, ई जरुर किछु गडबडी करत । हे भगवान, हमकी करु ।

युवक-१ : हँ, अहाँ ओहि भगवान के गोहरवैत रहु, जकर माला जपिकऽ अपना संगे सौसे परिवारके भिखमगा बनाकऽ राखि देलिए । हम एहि जंजाल सँ मुक्तिकबाट खोजि लेने छी ।

तेजी सँ प्रस्थान । दुनू आश्चर्य सँ जाइत देखैत रहैछ ।

* * *

दृश्य - ७

दृश्य पूर्ववत् । दिनका समय । एना लगैछ, जेना पुरुष तुरते भोजन कऽ कऽ उठल हो । खुरसी पर वैसल सुपारिक कतरा मुँह मे धरैत । खटिया एखन आगनमे धयल ।

महिला-१ : (घरस बहार होइत) आइ अन्तिम दिन छै । चण्डलवा कोनो बेरमे धमकबे करत ।

पुरुष-१ : हँ, ठीके ! समयो वीति गेलै आ एक्को पाइक जोगाड नै भ सकल । आब की होतै ? (महिला हाथ पोछैत खाटपर बैसि जाइछ ।)

महिला-१ : आब की होतै घर घराडी लिलाम करत ।

पुरुष-१ : मोहलत .... ।

महिला-१ : मोहलत - तोहलत कथीके । ओई दिनका घटना स आब कुछो नै होत ।

पुरुष-१ : हँ, ठीके । (चुप्पी) अशोक खयलक कि नहि ?

महिला-१ : कहाँ खयलक । पता नहि कत अछि ।

पुरुष-१ : हे, ऊ नहिए आबे तही मे नीक । महाजनके देखते ओकर नरसिं जागि जाइ है ।

महिला-१ : उ त धन कही ओइ बचिया के । नै त बोआ ओहि दिन की स की कऽ दीतै ।

ताबत युवक - २ क प्रवेश ।

युवक-३ : गोर लगैछी काका ।

पुरुष-१ : नीके रह ।

युवक-३ : काकी तोरो गोर लगै छीयौ ।

महिला-१ : खुब खुश रह । कह केम्हर रस्ता बीसरि गेलह ।

युवक-३ : (खाट पर बैसैत) कका, एकटा बात कहियो ।

पुरुष-१ : की ?

युवक-३ : अशोक के देखलियौ अ मंदिर जाइत ।

महिला-१ : ओकरा धर्म कर्म पर वापे जकाँ विश्वास रहै छै नै ।

युवक-३ : (चारु भर चकुआइत) नै गे काकी । ऊ असगरे नै रहै ।

पुरुष-१ : के रहै रे ?

युवक-३ : लक्ष्मी । महाजनके बेटी ।

पुरुष-१, महिला-१ : (संयुक्त स्वरे) लक्ष्मी संगे ।

युवक-३ : हँ, ओकरे संगे हहायल फुहायल जाइत रहै ।

पुरुष-१ : (महिला - १ सँ) एकर की माने भेलै अशोक के माय ?

युवक-३ : माने त साफ है । दुनू मे कुछो उपर - नीचा है ।

महिला-१ : चुप्प । तोरा सबके अहिना सब बातमे कारण भेट जाइ हौ ।

पुरुष-१ : डटियौ नै । किछो भ सकैहै ।

महिला-१ : अहाँके त ओहिना कोइ कुछो कहि दैअ । ओइ ल कऽ उड लगैछी ।

युवक-३ : (उठैत) काकी तो जे बुझ । गाममे तरे तरे कनफुसकी शुरु भ गेल है ।

पुरुष - १ आ महिला - १ एक दोसराक मुँह तकैत रहैछ ।

अच्छा, हम चलै छियौ ।

प्रस्थान ।

पुरुष-१ : अशोकक माय । हम अहाँके कहने रही नै अहाँ बात के गाल नै लाग देने रही आब बुझू ई बात

महिला - १ गुनधुन के मुद्रा मे अछि ।

पुरुष-१ : आब त एहि घरके अनिष्ट होब स कोइ नै रोकि सकनै ।

महिला - १ चुप्प अछि ।

हम त कहैछी, हमरा जाए दिअ ओम्हरे । देखियौ की करैए ।

महिला-१ : अहाँ की करबै जाक' ।

पुरुष-१ : समझएबै एक त कर्जा के अन्तिम दिन है, दोमस बात सुननै त सब पीत एक्के बेर हमरा सब पर बरसतै ।

महिला-१ : आब त जे होब के होतै से होएबै करतै ।

पुरुष - १ उबेग्न भ' टहल लगैछ ।

आब त एक्के बात छै चण्डलबाके हंसेरीके प्रतिक्षा कयल जाय ।

पार्श्वस महाजनक स्वर - रौ गणेशी छे । पुरुष - १ धरफरा कऽ पत्नि दिश तकैत अछि ।

पुरुष-१ : लगैए आबि गेल । हे, घर महक ढौवा कौंडी जे हय से धऽ लिअ, गहना गुडिया सेहो वान्हि लिय । खसी - बकरी खोलि दियौ ।

महिला-१ : (अपस्यांत होइत) कैला एना करैछी ?

पुरुष-१ : ऊ अवस्से घर जडा देत । आइ ककरो प्राण नै बांचत । जुमिगेल चण्डलवा कसाई ।

'की रे गणेसिया । घरमे छे कि नहि' पुन : पार्श्व सं स्वर । पुरुष - १ बरबडाइछ - लगैए आब बाजही पडत ।

पुरुष-१ : जी, मालिक । आयल जाओ ।

महिला - १ घरमे चल जाइछ । महाजन, गोराइतक संग प्रवेश ।

आयल जाओ बैसल जाओ ।

पुरुष-२ : नै, आइ बैसवौ नहि । आइ त निर्णय क क जएबौ । (पुरुष - ३ सँ) सुगवा तो आगि .... ।

पुरुष-१ : (बीचे मे लोकैत)मालिक ल द क इहे घर - दुवार है हमरा सभके । दया कैल जाओ ।

पुरुष-३ : पहिने आगि की नाम स ।

पुरुष-१ : नै गोराइत जी । दया करियौ हमरा सभ पर । हम सभ निर्दोष छी ।

पुरुष-२ : (पुरुष - ३ दिश ताकि) तोरा कुछ चाही ?

पुरुष-३ : जी की नाम स आगि । (पुरुष - १ सँ) अहाँक घर मे आगि नै है ?

पुरुष-१ : (निसांस फेरैत महिला - १ दिश ताकि) हे भगवान । आगि त छै घरमे, लाबि दियौ ।

महिला - १ आगि घर मे स बढा ओसारा पर राखिदैछ ।

पुरुष-२ : गणेशी, की भेलै रुपैया के जोगाड ?

पुरुष-१ : अखनु तक नै भेलअ मालिक ।

पुरुष-३ : ई त नै भेलै की नाम स गणेशी । आइ त नौ कि छौ की नाम स भऽ कऽ रहतो ।

पुरुष-२ : आइ अन्तिम दिन । काल्हि मोकदमा चहरि जएतौ इजलाश पर ।

पुरुष-१ : नै मालिक । हम गरिब आदमी, ई मोकदमा तोकदमा की जान गेलिऐ । मोहलत भेटिनै ।

पुरुष-२ : असभव । कर्जा असुल' अंएलापर हमर आदमी के मारबौ - पीटबौ करवही आ उनटे समयो लेबही ।

पुरुष-३ : (महिला - १ बरा देल आगि मे वीडी धरबैत) एह की नाम स गतर - गतर देह तोडी देने हय । तहिना हमहु आइ की नामस चुरबै किने ।

पुरुष-२ : सुगबा । आइ कोनो चीज घर मे रह नै दे । आब हद भ गेलै ।

पुरुष - ३ आगां बढैत अछि आ घरमे ढुक चाहैत अछि कि अशोक आ लक्ष्मीक प्रवेश । अशोक तेजी सँ आगां बढि पुरुष - ३ क पाछां सँ कालर पकडि घीचि लैछ ।

युवक-१ : वीसरि गेलै ओइ दिनका मारि ।

पुरुष - ३ सिठुवा जाइत अछि ।

एक्कोटा वस्तु मे हाथ लगैलही त हम टांग हाथ तोडिकऽ सडक पर फेकि देबौ । बुझले ?

पुरुष - २ गम्भीर नजरिसँ कखनो घोघ तनने युवतीके आ कखनो युवक - १ के देखैत रहैत अछि ।

पुरुष-२ : हमर खायल पीयल तँ सधएबाक चाही ने । एना जँ महाजनी असूल वेर में वेइज्जत करै, मारिपीट करै त लोक वेहवार सब खतम भ जएतै ।

पुरुष-१ : मालिक, खायल अन्न केनाकऽ नै तीरबै ।

पुरुष-२ : लेकिन ई की छै ? हो हल्ला, मारिपीट ? (पुरुष - ३ सँ) जो सुगवा, पुलिस के बजा क ला । जल्दी जो । एक त चोरी दोसर सीना जोरी ।

पुरुष-३ : लीअ ने की नामस मालिक । मोटका दरोगा के की नाम स अखने ले नै अबै छी । चारिए डटा चूतर पर की नाम स लगतै कि सभ फरमैसी घूसरि जएतै । की नाम स नेतगिरी छटैए सार ।

पुरुष-२ : सुगवा ?

पुरुष-३ : हे, की नाम सँ इएह हम गेली, आ की नाम सँ अइली ।

जाए चाहैए कि घोघ तनने लक्ष्मी घोघ हटालैत अछि ।

महिला-२ : ठहरु, सुगा कका ।

पुरुष-२, पुरुष-३ : (एक्कहि बेर) ऐ, लक्ष्मी ।

महिला-२ : हँ, हम छी । पुलिस बजएबाक कोनो काज नै छै । लिअ, अपन पाइ ।

हाथ मे धयल पाइक गेंट आगामे फेकि दैछ । एकक्षण पुरुष - २ कखनो पाइके कखनो महिला - २ के बेरा बेरी देख लगैछ । आ माथ पर हाथ धरैत धम्म द खटिया पर वैसि रहैछ ।

पुरुष-३ : मालिक की नाम स की भेल ?

पुरुष-२ : किछु नै, तौं जल्दी जो थाना । जल्दी बजा पुलिस के ।

पुरुष-३ : मालिक की नाम स आब त बात दोसर रंग के .... ।

पुरुष-२ : आब त आरो बजा । हमर बेटीके बहकाकऽ हमर इज्जत बर्बाद करबाक जुर्म मे कडगर सजाय दिअएबै एकरा । जो .... ।

महिला-२ : बाबू जी, सिपाही के बजायब, थाना - कचहरी करब एहि स इज्जत बढत ?

पुरुष-२ : तो चुप्प रह । कलकिनी ।

महिला-२ : ताही कलकं सँ बच के लेल त हम अशोक सँ बिआह कऽ लेलहुँ नै ।

पुरुष-२ : बिआह, अशोक सँ । (पुरुष - ३) जो न रे सार । जल्दी पुलिस बजा ने ।

पुरुष - ३ थकमकाइत अछि ।

महिला-२ : जाउ बजाउ पुलिस के । ककरा पकडतै । अशोक के नै बाबूजी । एहि मे अशोकक कोन दोष ? ई विवाह हम अपन मर्जिसँ कयलहुँ अछि । घर सँ नीकलि हम एत आयल छी, अशोक हमरा ल क भागल नहि छथि । जाउ, सुगा कका, पुलिस के बजा आउ । हम संगे थाना जायब ।

पुरुष-२ : (नर्भस होईत) नै, सुगबा । नै जो कनौ । बरु हमरा एत सँ उठाकऽ ल चल ।

पुरुष - ३, पुरुष - २ के दुनू हाथ सँ उठबैत अछि । सम्हारैत आंगन सँ बहराय चाहैत अछि । तावत युवक - २ क प्रवेश ।

युवक-२ : (थपडी पारैत) वाह, अति सुन्दर ।

युवक-१ : तौ गोधिआ ?

युवक-२ : हम बडी कालस बाहर खडा तमाशा देखैत रही । वाह, भौजी लक्ष्मी, अहाँ नँ आइ गुरुपक नाक ठाढ क देखिऐ । (रुपैया उठा पुरुष - २ सँ) ककाजी, ई रुपैया त लेने जाउ ।

पुरुष-२ : सुगवा ?

युवक-२ : चिचियाउ नै महाजन । अहाँक शोषणक अन्हारक अन्त होबही पर है । देखियौ क्षितिज पर लक्ष्मी भाभी सन लालिमा पसरि रहल छै । आब बला प्रकाश सँ डरु' महाजन, प्रकाश स डरु ।

पुरुष - ३ : चलु चलु मालिक । की नामस बड खिधानस भऽ गेलै ।

दुनुक प्रस्थान । युवक - १ आ युवक - २ गलवाहिदऽ कात भ जाइछ । महिला - २, पुरुष - १ आ महिला - १ के पयर छुवि प्रणाम करैछ । दुनूक आँखिमे नोर डवडवा जाइछ ।

अन्हार

*****

पेटक खातिर

[सडक नाटक]



प्रथम प्रदर्शन : २०५१ साल अषाढ ४ गते
स्थान : जानकी मंदीरक प्रांगन
निर्देशन : उपेन्द्र भगत
कलाकार : अमितेश साह (पुरुष-१), राम विनय मंडल (गुलभंटी), उपेन्द्र भगत (सिपाही), प्रदीप शर्मा (नेता), दीपक कुमार कर्ण (युवक-१), मिथिलेश गुप्ता (युवक-२), योगानन्द कर्ण (युवक-३), उदय नारायण ठाकुर (पुरुष-२), विजयकान्त ठाकुर (पुरुष-३)
प्रस्तुतकर्ता : आकृति, जनकपुर ।

पेटक खातिर

एकटा खुजलठाम । पुरुष - १ कांख मे एमटा कारी भोरी लटकौने देखि पडैत अछि । वाम हाथमे वाँसुरी आ दहिन हाथमे डमरु । पहिरन चरखनाक लुंगी कारी गोलगाला, डारमे वान्हल लल्हका गमछा । गरदनिमे कारी डोरीमे ताबिज लटकल .... ।

काँख तरक कारी भोरी उतारि विचमे धऽ दैछ । अपन वामहाथसं वाँसुरी पकडि मुंहमे लगा फुकऽ लगैछ । दहिन हाथमे राखल डमरु बजबैत भोरीक चारुकात घुमऽ लगैछ । पुरुष - १ क सँगे आयल एकटा १० - ११ वर्षक वच्चा सुटकल एक कातमे बैसिरहैछ ।

पुरुष-१ : (एककात ठमकि) साहेबान, कदरदान । आबिगेल, अपनेक शहरमे आबिगेल पहिलबेर देखब ई अजुबा । मात्र एक टकामे मोनकवात जानि सकैछी (कनेकरुकि) देखु ई नहि बुझब हम जन्तर वेच वला मात्र छी । हमर जन्तर साधल अछि ४६ वर्षक । अबै जाऊ अबै जाऊ । (पुन : किछु रुकि) हँ जे पहिने मागब तकरा फ्रियों भेट सकैत अछि । माल सिमित अछि । (एहिक्रममे किछुकाल धरि बँसुरी वजबैत, डमरु डबडबबैत कालाकार परिधिमे चक्कर लगबैत रहैत अछि ।)

ताबत दर्शक महक यूबक - १ आगा बढैत अछि ।

यूबक-१ : खेलवाला । तोहर जन्तरक की विशेषता छह ?

पुरुष-१ : एकटा रहय तखन कही । एकसने एक अछि ।

युवक-१ : नैयो कोनो खास विशेषता कहक ने ।

पुरुष-१ : (पुन : बाँसुरी बजा, डमरु डबडबबैत अछि) विशेपता ? न सुनु बाबूजी । एकटा जन्तर ४६ वर्षक साधल अछि । एकसएक लोक एकर सिद्ध कऽ पास कऽ देने छैक ।

यूवक-१ : की करत ई जन्तर ।

पुरुष-१ : ई लोकके मन वदलत ।

यूवक-१ : माने ?

पुरुष-१ : एहिमे प्रजातन्त्रके महशुस कर वला गुण छै ।

यूवक-१ : औजी एखनो नै वुझलहु कनेक फरिछाउने ?

पुरुष-१ : अहाँ केहनो प्रतिगामी विचार वलाके ई जन्तर वान्हि दिऔक ओ तुरन्ते प्रजातन्त्र, प्रजातन्त्र घोस लागत ।

यूवक-१ : अच्छा ?

पुरुष-१ : ओतबे नहि । जनिका प्रजातन्त्रपर खतरा नजरि अबै छनि हुनको बाँहिमे बान्हि दिऔन त सभनरि प्रजातन्त्रे देखवामे अओनति ।

यूवक-१ : अए यौ । एहि जनतरस मात्र अनुभूतिए अओनैक अथवा प्रजातन्त्र भेल जका बुझएबो करतै ?

पुरुष-१ : सएहने एकर विशेषता छै । किछुकर नहि पडतै । बैसले बैसले प्रजातन्त्रके मजा लुटल जा सकैछै ।

यूवक-१ : जनताके विचोमे ने जाए पडतै ?

पुरुष-१ : कथिलेल ? जे बैसले बैसले सबबात भ जायत न किए लोकक सेवाकरत केओ ।

यूवक-१ : (माथ डोलबैत 'हुँ' बजैछ) दोसरो तरहक जन्तर अछि की ?

पुरुष-१ : (डमरु आ बाँसुरी बजबऽ लगैछ) हँ दोसरो तरहक अछि ।

यूवक-२ : (घेरामेस आगा वढि) आ दोसर तरहक केहन जन्तर अछि ।

पुरुष-१ : दोसर त एहु स तेज अछि ।

यूवक-२ : कोना यौ ?

पुरुष-१ : ई जन्तर ककरो नाम लऽ कऽ सिरमा तरमे राखि सुतल जाए त ओहि व्यक्तिक पेटक बात जानल जा सकैछ ।

यूवक-२ : एहि सँ फायदा ।

पुरुष-१ : बहुत फायदा छै, जेना के घुस खाकऽ काज कऽ सकैए, पता लागि जएतै ।

यूवक-२ : अच्छा ।

पुरुष-१ : इहो पता लगौल जा सकैए जे घुस देबबला कनेक अंक धरि आंट क' सकत ।

यूवक-१ : हँ, तखन एकटा हमरो दिअ ।

यूवक-२ : हमरो एकटा देव ।

यूवक-३ : हे हमरो एकटा दिअ । (ताबत दु तीन गोटे हमरो एकटा हमरो एकटा स्वरक संग मांग करैत अछि ।)

पुरुष-१ : ठहरु । एखन ककरो नहि देब ।

यूवक-३: : किए ?

पुरुष-१ : छै बात ।

युवक-३ : त से कि छै, हमहू सब बुझिऐ ने ।

पुरुष-१ : जे हम कहलहुँ, ताहिपर अहाँ सभके विश्वास भऽ गेल ? (सभ चुप्प अछि ।)

पुरुष-१ : हम बुझै छी, अहाँ सभ गुन धुन क रहल छी । त लिए एकरा हम जाचिकऽ देखबैत छी । (पुरुष - १ वसुरी, डमरु बजबैत फेर एकचक्कर लगवैत अछि । एक ठाम अटकि जाइत अछि ।)

पुरुष-१ : गुलभटी ? (१० - ११ वर्षक वच्चा जे औघायल रहैछ, चौकि कऽ साकांक्ष भ' जाइछ ।)

पुरुष-१ : गुलभटी ?

गुलभटी : जी, उस्ताद ।

पुरुष-१ : रोजी रोटी के सबाल छै ।

गुलभटी : हुकुम उस्ताद ।

पुरुष-१ : खेलशुरु कर पडतौ ।

गुलभटी : त शुरु करु ।

पुरुष-१ : साहेवान, कदरदान । आव अपने सभके जन्तरके कमाल देखबैत छी । (सामूहिक रुपे देखाउ, देखाउ क स्वर अभरैछ । पुरुष - १ कारी भोरामेसँ दुगोट चादरि निकालैत अछि । एकटा विछबैत छैक । गुलभटीके इशारा करैछ । गुलभंटी चादरि पर सुति रहैछ । पुरुष - १ दोसर चादरि ओकरा ओढादैत छैक । फेर वांसुरी आ डमरु बजबैत घुम लगैछ ।)

पुरुष-१ : (एकठाम ठमकैत) आव हम देखायव हमर गुलभंटी एहि जन्तर के प्रभाव स कोना सभक मोनक वात वतबैत अछि ।
दर्शक सभ साकांक्ष भ' जाइछ ।
पुरुष-१ : कारी भोरा सँ एकटा जन्तर चीत सुतल गुलभंटीक छातीपर राखिदैछ ।
पुरुष-१ : (जोरसँ डमरु बजबैत) गुलभंटी ?
गुलभंटी : जी उस्ताद ।
पुरुष-१ : खेल चालु करु ?
हम तैयार छी उस्ताद । (पुरुष - १ आब दर्शक के ठिकिअबैत, डमरु बजबैत, घुम लगैछ । एक गोटे लग जा अटकि जाइछ ।)
पुरुष-१ : गुलभंटी ?
गुलभंटी : वाजू उस्ताद ।
पुरुष-१ : आब हमरा लग आ ।
गुलभंटी : आबि गेली उस्ताद ।
पुरुष-१ : (पुरुष - २ के ठिकिअबैत) हिनका चिन्हैत छीही ?
गुलभंटी : खूब नीक जकां ।
पुरुष-१ : ई के छथि ?
गुलभंटी : ई स्मगलर छथि ।
पुरुष-१ : (चौकि) आएँ, स्मगलर ?
गुलभंटी : हँ, उस्ताद । भारत सँ सामान लावि भन्सार टपबैत छथि आ काठमाण्डू भेजैत छथि ।
पुरुष-१ : एखन हिनका मोनमे की छनि ?
गुलभंटी : ई जल्दी एत स जाए चाहै छथि ।
पुरुष-१ : किए ?
गुलभंटी : जटही भन्सार पर ट्रक पकडायल छनि । एकटा पावर वला नेताके सिफारिस पत्र लेब आयल छलाह । से भेटि गेल छनि, तएँ घरफडी छनि जएबाक ।
पुरुष-१ : से कोना बुझै छही ?
गुलभंटी : हुनकर उपरका जेवीमे सिफारिशी चिठ्ठी छनि ।
पुरुष - २ तेजी स जेबी झाँपि लैछ । पुरुष - १ हाथबढा जेबीस पत्र बहार कऽ लैछ आदर्शक के देखाब' लगैछ । पुरुष - २ क चेहरा उडल उडल सन । पुरुष - १ फेर चक्कर देब' लगैछ । एक ठाम अटकि जाइछ ।
पुरुष-१ : गुलभंटी ?
गुलभंटी : हँ उस्ताद ।
पुरुष-१ : हमरा लग आ !
गुलभंटी : आबि गेल हुँ गुरु ।
पुरुष-१ : एहि बाबू साहेब के चिन्है छे ?
गुलभंटी : चिन्हलियनि ।
पुरुष-१ : पहिरन केहन छनि ?
गुलभंटी : निचा उजर पेंट आ उपर छिटक शर्ट पहिरने छथि ।

पुरुष-१ : हुँ, (किछु सोचि) अच्छा, हिनक मनक वात बता ।
गुलभंटी : मोने मोन फुलभरी छुटैत छनि ।
पुरुष-१ : (साश्चर्य) फूलभरी ?
गुलभंटी : हँ, उस्ताद । आई एकटा नीक सौदा पटलन्हिए । (पुरुष - ३ कछमछाए लगैछ ।)
पुरुष-१ : केहन सौदा ?
गुलभंटी : मोहीके लगत कटाब वला सौदा ।
पुरुष-१ : ई त जल्दी नहि कटाइ छै ?
गुलभंटी : इहो कयबर्ष झुललखिन्ह । आब दशहजारपर आइए सौदा पटि गेल छनि । आ काल्हि लगत कटि जएतै ।
पुरुष-१ : से कोना बुझै छही ?
गुलभंटी : एखने आधा घंटा पूर्व जानकी मन्दिरक उतरबारी कात वैना महक पाँच हजार लेलखिन्हए ।
पुरुष-१ : ईहो पता छौ ?
गुलभंटी : एतबे नहि, सभ पाई घरावालीके पठा देलखिन्ह आ एक हजार दारु के उधारी देबला पछिलका जेबीमे छनि ।
पुरुष-१ : (पछारीक जेबी सँ हजारी वहार करैत) नम्वर बता सकैत छै ?
गुलभंटी : किएकने । (पुरुष - ३ क मुंह अपने सन भऽ जाइछ । दर्शक हंसि दैछ । पुरुष - १ क नजरि एकाएक किछु दुर पडि जाइछ । आंखिमे दहशति भरि जाइछ । धरफरा कऽ भोडी उठाव लगै छ ।)
पुरुष-१ : गुलभंटी ?
गुलभंटी : जी उस्ताद !
पुरुष-१ : खेल समट, नाहकमे मारि खएबे ।
गुलभंटी : की भेल उस्ताद ?
पुरुष-१ : सिपाही अबै छौ । कहने रहए जे पन्द्रह बीस मिनट सँ फाजिल एत खेल नहि देखवला ।
गुलभंटी : उस्ताद ?
पुरुष-१ : जल्दी भाग नहि त चारि डंटा मारतौ आ हवालात मे बन्नो कऽ देतौ ।
गुलभंटी : ऊ सार, अपने चोर है, हमरा की पीटत ।
पुरुष-१ : वाप रे । गुलभंटी तो हमर धंधा चौपट करवे । ऊ आबि गेलै ।
गुलभंटी : आब दिऔ उस्ताद, देखलजएतै । (पुरुष - १ क मुहपर एखनो दहशत अछि सिपाही घेराके चिरैत आगा वढैत अछि ।)
सिपाही : अएँ, रौ । तो एखन धरि एत सँ गेल नहि छे ?
पुरुष-१ : हवलदार साहेब, आब जाइते छली कि अपने .... ।
सिपाही : चुप जाईते छलहु .... । वापक राज छौ, अएँ ।
गुलभंटी : (बीचमे वात लोकैत) उस्ताद ।
पुरुष-१ : की कहै छे गुलभंटी ।
गुलभंटी : हवलदार साहेब की कहै छथि ?
पुरुष-१ : कहै छथि जल्दी एतस जाए लेल ।

गुलभंटी : उस्ताद, हिनका कहि दिऔ, हाकिम बेसब्रीस हिनकर ईन्तजार करै छथि । (उस्ताद सिपाही दिश ताकs लगैछ ।)
सिपाही : किएक, हमरा किएक ईन्तजार करत ?
पुरुष-१ : किएक ईन्तजार करैत हयतनि ?
गुलभटी : कमिशन के पाई लेल ।
सिपाही : (रोबसँ) चुप्प सार । कमिशनके पाईलेल ।
गुलभंटी : उस्ताद, वात बढि रहल छै ।
सिपाही : दुइए चारि डंटा लगतौ कि सभ खेल घुसरि जएतौ । (पुरुष - १ दुनुक सम्वादमे भौचक्क पडल अछि ।)
पुरुष-१ : (निहौरा करैत) हजुर । एहिमे बच्चाके की कसुर । ई त जन्तरे एहन छै जे लोकक पेटक बात कहि दैत छैक । ई बच्चा तकरे प्रभावमे वाजि रहल अछि ।
सिपाही : त एहन बकवास किए करैए । हमरा सभके ईज्जत नहि अछि की ?
गुलभटी : उस्ताद !
पुरुष-१ : तो चुप्पे रहि जो कनिकाल ।
गुलभंटी : नहि उस्ताद । जा धरि हमरा छातीपर ई जन्तर रहत हमरा रहल नहि जाएत ।
सिपाहि : अच्छा त जाधरि ई जन्तर एकरा छाती पर रहतै ई साँच बैजते रहतै (पुरुष - १ स) त फेकि दे एहि जन्तरके ।
पुरुष-१ : (निहोरा करैत) नहि हजुर । ई हमर रोजी रोटीक सबाल अछि, जँ खेल नहि देखएबै त लोक पतिअएतै कोना । आ ज पतिअएतै नहि न किनतै कोना ।
सिपाही : त एना अन्ट सन्ट नै कही बाजला ।
गुलभटी : उस्ताद ।
पुरुष-१ : (थाकल थाकल सन) की कहै छे ।
गुलभंटी : हवलदार साहेवके कहि दिऔन पछिलका जेबीमे बीस बीस हजार टाका नहि धरैथ लोक निकालि लेतनि ।(सिपाहीक चेहरापर एक क्षण आश्चर्य आ' आतंकक भाव अवैछै । हाथ पछिला जेबीपर चलजाईछ । फेर यथावत भ अपनाके सहज वनबैत अछि ।)
सिपाही : अएँ ई की कहलक बीस हजार रुपैया ? हम कतसँ एतेक पाई लाएव । (पुरुष - १ सँ) हे देख कहि दैत छियौ । पाँच मिनटके भितर नै उठौले अपन ई भावट त हम अपनेस फेकि देबौ ।
पुरुष-१ : नै माई बाप । मात्र १० - १५ मिनट आउर ।
सिपाही : किछु नहि सुनवौ । बड बढल बढल वात वजैछै ई तिल विखना । वीस हजार । (सिपाही मोछ पर ताव दैछ । घेरामे चारु कात रोब सँ तकैत अछि ।)
पुरुष-१ : गुलभटी ।
गुलभंटी : जी उस्ताद ।
पुरुष-१ : तोरा गल्ती भ गेलौ ।
गुलभटी : कथीक गल्ती ।
सीपाही : देख । देखै छीही अपन गल्ती नै स्वीकार करैछै ।
पुरुष-१ : (सिपाही के इसारास कहैत) ठहरु समभ्फा दैत छीयैक । (गुलभंटीस) बेचारा एकटा हवलदार ई बसि हजार रुपैया कत देखत ? (सिपाही समर्थनमे माथ डोलबैत अछि ।)

गुलभटी : उस्ताद बोरी विस्तर समटु ।
पुरुष१ : (किछु चौकैत) किएक ?
गुलभटी : अहाँ के अपने जन्तरपर विश्वास उठिगेल अछि ।
पुरुष-१ : (एकक्षण सोचैत) नहि से न हम नहि कहलियौ ?
गुलभटी : तखन ई गप्पी सिपाहीके फेरमे पडि गुम्म किए भ गेल छी । (सिपाही पिताकs आगा बढैत अछि कि कमिशन के वात सुनि रुकि परैत अछि ।)
पुरुष-१ : कमिशन बला बात त ..... ।
गुलभटी : (वीचमे लोकैत) कमीशन ? मारि पिटमे भ्कै भ्कगडामे, शान्ति, सुरक्षामे, मिलापत्रमे, चोरी, डकैतीमे लागु पदार्थके ओसार पसारमे ।
पुरुष-१ : (आगुंताकs) की सभ वकै छे ।
गुलभटी : धैर्य राखु उस्ताद । स्मगलिंगके माल टपएबामे, वन जंगल नाश करमे, जुवा तास खेलएबामे, स्थानिय बैक सभमे पाकेटमारी करबएबामे सभ मे हिनके सभक हाथ रहै छनि ।
सिपाही : (कोधित भ' पुरुष - १ लग पहुचैत) हे आब हद भ गेल, तो उठबैछे कि दिऔ लाठी । (हाथक लाठी उठबैत अछि ।)
पुरुष-१ : दोहाई साहेबके । हे आब हम उठएलहुँ । वाज अएलहुँ ई जन्तर वेच सँ ।
सिपाही : नहि तो चल हमरा सँगे थाना । ओतहि जन्तर बेचबएबौ ।
पुरुष-१ : मालिक, हमरा सभक कोन दोष । ई त ..... ।
सिपाही : चुप्प सार । कोनो नीक लोकके एना चौक चौबटिया पर ठाढे बेइज्जती करब की ई उचित भेलै ? आब हम नहि मानबौ ।
गुलभटी : उस्ताद ।
पुरुष-१ : (आँखि गुरडिकs ओम्हरे तकैत)आव की कहबाक छौ सभ धन्धा चौपट क देले ।
गुलभटी : साँच कहबामे दुख त उठाबही पडैछै उस्ताद ।
पुरुष-१ : आ पेट ?

पुरुष - १ गुम्म भ । जाईछ सिपाही फेर' उठा जल्दी चल कहि पुरुष - १ के कुबिआब लगैछ ।

पुरुष - १ भ्कोरा ठीक करैछ आ बच्चाक देहपर राखल जन्तर उठाब लगैछ ।

गुलभटी : ठहरु उस्ताद ।
पुरुष-१ : (ठमकि) किए ।
गुलभटी : ज आब जाहीके बात छै त सभक सामने एकटा साँच आर वाजीए दैत छी । (सिपाही साकांक्ष भ जाइछ । मुहपर एकभाव अबैछ दोसर भाव जाईछ । कछमछाहट बढि जाइछ । पुरुष - १ गुलभंटी दिश एनाकs तकैछ जे जं आब ओ किछुओ वाजल त सव नाश भ' जएतै ।)
गुलभटी : एहि क्षेत्रमे जतेक चोरी, डकैती भेलैए एक्कोटा चोर पकडल गेलैए ?
यूवक-१ : नहि, से त पकडल नहि गेलैए ।
गुलभटी : किएक ? पुछियौ सिपाहीजी सँ ।
यूवक-२ : कि औ हवलदार साहेव । किए ने पकडएलै ?
सिपाही : (भ्कडकि) से तोहर काज छौ ? खोजवीन त चलिए रहल छै ।

यूवक-३ : यौ कहिया धरि ई खोज वीन चलैत रहत आ कहिया चोर पकराएत ।

सिपाही : अवश्य पकडायत !

गुलभंटी : फूसि । एकदम फुसि । औ उस्ताद । चोर आब त नहिए पकडाएत ।

पुरुष-१ : किए ?

गुलभंटी : कारण सुनब ? त सुनु । आई ताही चोर सभक एकटा वैसार छलै । धर्मशालाके एकटा कोठरी मे । (सिपाहीक मुहपर हवाई उड लगैछ । ओ चारु भर चकुआइत जाए लगैछ ।)

गुलभंटी : हवलदार साहेव । ठहरु, हमरा सभके थाना लेनही चलु । (जाइत जाइत सिपाही ठमकि जाइछ । मुदा भावसँ भितरे भितरे छटपटाईत ।)

गुलभंटी : हम जे कहने छलहुँ जेवीमे बीस हजार टकाक वात ।

यूवक-१,२,३ : (सँयुक्त रुप सँ) हँ हँ बीस हजार टकाक वात की भेलै ?

गुलभंटी : उस्ताद । ओ बीस हजार टका ओएह चोर सभ पहिले किस्त बुझौलक अछि सिपाही साहेब के । (सिपाहीक मुह कानऽ सनके भ जाइछ । सिपाही चोर जका चकुआइत चलि जाइत अछि ।)

गुलभंटी : उस्ताद, चलु, उठाउ ।

पुरुष - १ झोरा उठब लगैछ ।

युवक-१ : ठहरु ।

पुरुष-१ : (गहीर नजरि सँ देखैत) किए ?

युवक-१ : अहाँ खेल समेटि कत' जाए चाहैछी ? (एहि बीच सिपाही सहटिकऽ चल गेल रहैछ ।)

पुरुष-१ : हवलदार साहेब के सँगे थाना जएबै नहि ।

पुवक-२ : मुदा हवलदार साहेब छथि कत ? (सभ ताक' लगैछ । सिपाही पहिने चलगेल रहैछ ।)

युवक-१ : आब, ओ अपने भगिगेल छोडु देखाउ किछु आर ।

पुरुष-१ : की देखाउ हजुर । ई जन्तर कयवेर आफत आनि देलक अछि । मुदा की करु, पेटक सवाल छै ।

युवक-१ : हे, साँच वात एहिना कष्टकर होइछै । अहाँक जन्तर त लुट्‌ भ जाएत । किए सोचै छी । (पुरुष - १ वांसुरी आ डमरु वजब लगैछ । एक फेरा मारि लेलाकवाद पुन : अपना स्थानपर आवि ठाढ भ' जाइछ ।)

पुरुष-१ : गुलभंटी ?

गुलभटी : हँ, उस्ताद ।

पुरुष-१ : खेल चालु रहय ।

गुलभंटी : ठिक छै उस्ताद ।

पुरुष-१ : (एक गोटे नेता सन लोक लग ठाढ होइत) एम्हर आ ।

गुलभंटी : आवि गेलहुँ ।

पुरुष-१ : इं के छथि ?

गुलभंटी : ई सता पक्षक वड प्रिय नेता छथि ।

पुरुष-१ : हिनक मनकबात वताबऽ सकैछे ?

गुलभंटी : किएक ने । ई अगिलावेर सांसदक टिकटक जोगाडमे लागल छथि । (नेताक चेहरा खिल उठैत छनि ।)

पुरुष-१ : आगा बता ।

गुलभंटी : एहि अढाई बर्षमे टिकट पक्का करबाक लेल वडवड पापर वेललनि । भरिसाल पहुचौलनि केन्द्रमे आम माछ खसी आ .... रह दिऔन ।

नेताक चेहरा उतरि जाइछ ।

पुरुष-१ : आर किछु ?

गुलभंटी : वहुत किछु छै । (नेता हताश होइत पुरुष - १ के ईशारासँ अपना लग वजबैछ ।)

नेता : (जेना कानमे कहैत हो) खेलबला । आब किछु नै वजाउ एकरासँ ।

पुरुष-१ : हजुर, ई नहि वजतै त हम सभ खएबै कथी ? जन्तर पडले रहिजएतै ।

नेताजी : (एम्हर ओमहर चकुआईत) हे, सभ जन्तर हम किन लेब । जाउ उठु एहि ठामस । ई हमर चुनाब क्षेत्र हय ।

पुरुष-१ : (प्रशन्न होइत) एह, माई बाप । अपने सभक दया पर त हम सभ जिबै छी । (गुलभंटीसँ) गुलभंटी ?

गुलभंटी : हकुम उस्ताद !

पुरुष-१ : खेल खतम । अपन दाना पानीके जोगाड भऽ गेलौ ।

गुलभंटी : नेताजी के वारेमे .... ।

पुरुष-१ : नहि, आव भऽ गेलै । चल । (नेताजी आश्वस्त होइत छथि)

गुलभंटी : मुदा जिल्ला विकास समिती सँ लऽ गेल कामकं लेल खाद्यान्न सभत अपने खयलनि, जन सभ बोनिलेल नगरमे हिनका तकैत छनि से कहि दिऔं । (नेताजीक चेहरापर फेर उदासी आ कछमछी देखि पडैछ ।)

नेताजी : (पुरुष - १ सँ) खेलवाला ।

पुरुष-१ : गुलभंटी, समट अपन भाभट ।

गुलभटी : ई सभ जन्तर किनताह ने ।

पुरुष-१ : से त किनताह ।

गुलभंटी : तखन ई हमरा सभक शुभ चिन्तक भेलाह ।

पुरुष-१ : हँ, से त भेलाहे ।

गुलभंटी : त, जाइत, जाइत एकटा आर सलाह छनि ।

नेताजी : (लगभग चिचिआकऽखेलवाला । कतेक पाई भेलह । बन्न कर ई खेल जा जल्दी जा ।

पुरुष-१ : (किछु जोडैत) एक सय पचास टाका । (नेताजी जेवीसँ पर्स निकालि पाई गन लगैछ ।)

गुलभटी : उस्ताद ।

पुरुष-१ : आब भ गेलै । चुप्प ।

गुलभंटी : एकटा छोटके सल्लाह हिनके फायदा करतनि ।

पुरुष-१ : ई पुन : नहि चाहैत छथि ।

गुलभंटी : तैयो हिनका जान वंचतनि ।

पुरुष-१ : तेहन वात छै ।

गुलभटी : हँ, उस्ताद । किछु शिक्षकमे फयल भेल उम्मेदवार हिनका खोजि रहल छनि । (नेताजी पाइ गनब छोडि साँकाक्ष भS जाइछ ।)

पुरुष-१ : किएक ?

गुलभटी : प्रत्येक सँ बीस हजार टाका उठालेने छथिन पासकरा देबौ कहि कS । सभ पाई अपने लग राखि लेलनि आ आयोग वला अपना आदमी पास कS लेलक । हिनकर एक्कोटा नहि पडलनि ।

पुरुष-१ : तखन ?

गुलभटी : ओ सभ जुनाक माला लS कS हिनका खोजिते एम्हरे आवि रहल अछि, ई जतेक जल्दी भ सकैक भागि जाथु । (नेताजीक होश उडल जाई छनि ।)

गुलभंटी : आ उस्ताद ।

पुरुष-१ : भ' गेलै । नेताजीके फेर भागहु पडतनि । वन्न कर ई वकवास । (नेताजी जल्दी जल्दी पाई गन लगैछ ।)

गुलभटी : किछु आर कह चाहैछी ।

नेताजी : (उडल उडल सन) खेलवाला, आब बन्न करु ।

पुरुष-१ : गुलभंटी, नेताजी पाई गनि लेने छथि । एकके ठाम एक मुष्ठ । किए बक बक करब दश ठाम । चल ।

गुलभटी : मुदा उस्ताद जाधरि हमरा छातीपर जन्तर रहत, हमरा मुह सँ साँचबात सभ निकलिते रहत, ई बात बुझल नहि अछि ?

पुरुष-१ : (जेना किछु मोन पडैछ) जा, नएँ ई बजैत छल बक बक । हे लिअ, जन्तर उठालेन छी ।

गुलभटी : ठहरु उस्ताद ।

पुरुष-१ : कैला रे ? आब न खेल खतम छै ।

गुलभंटी : नै उस्ताद । खेल त आब शुरु होत ।

पुरुष-१ : जल्दी बाज । की कह चाहैछे ?

गुलभंटी : नेना जी के बजबियौ ।

पुरुष-१ : की भेलैन से ?

गुलभंटी : देखियौ दक्षिण दिश जुत्ता के माला लS कS .... ।

पुरुष-१ : (वीच मे लोकैत) भागु नेना जी । (आस्वयं जन्तर उठा गुलभंटीक संग एक दिश पडा जाइ छै ।)

समाप्त

नेताजी आबि रहल छथि

पूर्व प्रदर्शित 'एकटा आओर वसन्त'क भावपूर्ण एकटा दृश्य



प्रथम प्रदर्शन	:	२०५० साल जेठ ८ गते
स्थान	:	नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी, काठमाडौ
निर्देशन	:	वलराम प्र. राय
कलाकार	:	वलराम प्र. राय, प्रदीप शर्मा, दीपक कर्ण, उपेन्द्र भगत, अमितेश साह, संजय शर्मा, विजयकान्त ठाकुर, विद्या चौधरी, सरस्वती चौधरी
पार्श्वमे	:	मंच सज्जा : सुदर्शन लाल रुप सज्जा : चन्द्र किशोर झा प्रकाश : श्रीनाथ झा सुमन सगीत : सुमन कुमार नेपाली गायन : सुनील कान्त ठाकुर
प्रस्तुति	:	अभियान, जनकपुर

नेताजी आबि रहल छथि

खाली मंचक एकटा कोनपर बैसल सुत्रधार । अन्हार मंचपर मात्रं सुत्रधार पर प्रकाशक गोला पडैत । हाथ, मुंहक भावसं एना बुझाइत जेना ककरो इन्तजार होइक । घडीपर बेर बेर नजरि जाइत फेर चकुआ क तकैत । ई क्रम कनेककाल चलैत छैक । फेर ओ उठि जाइत अछि आ टहल लगैछ । प्रकाशक घेरा ओकर आकृतिक संग मंचपर चलैत रहैछ ।

सूत्रधार : (ठमकि) हद भ गेल । ओना क' कहि देने रहिऐ जे आइ त कोनो हालतिमें नाटक करही पडत । मुदा ओ छथि जे एखन धरि अभरि नहि रहलए ।

कनेककाल तहिना व्यग्र भ' टहलैत आ एकदिश गौरसँ देखैत बूझि पडैत अछि । फेर माथ हिला टहल लगैछ ।

सूत्रधार : (किछु रोषसं) ए, कत्त रहलहुं । लगैए आइ हमरा दर्शक सभ स जुता खुआएब । लोक बैसल छथि आ अपने पार । मनमें विचारो त चाही ..... ।

तखने नटीक प्रवेश । प्रकाशक घेरा नटीपर सेहो पड लगैछ ।

नटी : (अन्तिम बात पर जोडदैत) कथीक विचार ।

सूत्रधार : (रोषसं) इएह अएलखिन्ह मलिकाइन विचार जान ।

नटी : आहिरेबां, एतेक पिताएल किए छी ?

सूत्रधार : नहि, हमरा त पितएबाक नहि चाही । कही त हम एत्त नाच लागी ।

नटी : लगैए सएह कर पडत ।

सूत्रधार : की माने ?

नटी : नाटक प्राय : नहि हयत ।

सूत्रधार : (साश्चर्य) आएँ !

नटी : हँ, नाटक नहि हयत ।

सूत्रधार : किए ?

नटी : कलाकार सभ नहि मानै छथि ।

सूत्रधार : किए नै मानै छथि ?

नटी : कहव छनि जे एतेक मेहनतस नाटक करैछी, मुदा मोजर नहि देल जाइए ।

सूत्रधार : मोजर ? से कोना ने दैत छिएनि । रिहलसलक हेतु घरे घरे बौआ कS बजविते छियनि । घडी घडी चाह पान भइए जाइ छनि । तखन मोजर ..... ?

नटी : से त ठीक छै, मुदा हुनका सभके कथन छनि, जे ई छुछुआन सन लगैए ।

सूत्रधार : से कोना ?

नटी : आब जखन सभ केओ अपन अपन अधिकार आ सुविधाक मांग कS रहल हो तखन कलाकार किए ने करथि ।

सूत्रधार : मुदा कलाकार कोनो हमर कर्मचारी नहि ने छथि । ओ सभ त मित्र छथि ।

नटी : कहांदन एहिना मित्र कहि खूब ठकन छियनि, से आव फरिछाव' चाहै छथि ।

सूत्रधार : (लगभग चिचिआइत) खाक सोच' पडत । हुनको सभके एखने हडताल करबाक छलनि ।

नटी : कहै छलाह तुकपर मांग रखने पूरा होईछै ।

सूत्रधार : चुपु ! तुकपर मांग रखने !! एखन दर्शक सभ उठि उठि कS ज जुनिआवं लागए त कोन मांग, के पूरा करतै ?

नटी : अहा त ओहिना खिसिआ जाइछी ।

(चुप्पी)

सूत्रधार : ज कि ओ सभ नहिए अएलाह त आब किछु सोच' तS पडत ।

नटी : एत्तेक जल्दी की भS सकैछ ।

सूत्रधार : भ किएने सकै छै ।

नटी : कोना ?

सूत्रधार : विषय सोचू । नयां नाटक मंचित क' देब ।

नटी : खेलत के ?

सूत्रधार : हम आ अहां !

नटी : हम अहां ! दुत् आव की खेलब हमसभ !

सूत्रधार : से किए ? जरुरी पडने सभ किछु कर' पडैछै ।

नटी : हमरा बूते नै होएत ।

सूत्रधार : बेसी छीडहिल्ला नहि खेलाउ । लगैए अहु मौका देखने भाओ बढा रहल छी ।

नटी : अहुं कीदन कहादन बाज' लगैछी । आब धीआ पुताक आगां ..... ।

सूत्रधार : त की एसगरिमे लोक नाटक खेलैए ।

(चुप्पी)

नटी : लगैए अहां नै मानव । त ठीक छै । तैयारी करु !

सूत्रधार : (किछु सोचैत) मुदा तैयारी कोना करु ? ने कथानक अछि आ ने ..... ।

नटी : से त अही कहैछी । छोडु आई ।

सूत्रधार : (दर्शक दिशि देखैत) अहा त महिला छी, भS सकैए छोडियो दिए मुदा हमर दशा !

नटी : (बीचमे लोकैत) तखन की करब, ने रिहलसल आने पार्ट आदि ।

सूत्रधार : तकर चिन्ता अहा नै ने करु । के रिहलसल कS कS पार्ट खेलाइए ।

नटी : फेर जे कथानक हयत तकर पार्टो याद हएबाक चाही ने ।

सूत्रधार : हद भ गेल । औजी पार्ट याद कS कS के खेलाइत अछि । देखै नै छिऐ, प्रोम्पटर सेहो एकटा कलाकार भS गेल अछि ।

नटी : की माने ?

सूत्रधार : माने पाछास प्रौम्प्ट कनेक ठीक स कहै त नाटक खेपि लेबै की ?

नटी : (सभ किछु अबधारैत) जे अहां करी ।

(चुप्पी)

सूत्रधार : सभ सं भारी प्रश्न अछि कथानक की हुअए ।

सोचबाक मुद्रामे एक - दू बेर टहलि मोढापर बैसि जाइछ । नटी सेहो दोसर मोढापर बैसि जाइत अछि । कनेक कालक बाद पार्श्वमे नारा लगबैत जुलुशक स्वर सुनि पडैछ- 'महगी नियन्त्रण करु', 'अजय चोर गद्दी - छोड', 'प्रजातंत्र जिन्दावाद' । सूत्रधार कनेककाल अकानैत अछि फेर जेना किछु फुरागेल होइक चौकि उठैत अछि ।

सूत्रधार : हे, सुनैछी !

नटी : हँ, हँ, बाजू !

सूत्रधार : (प्रशन्न होइत) विषय भेटि गेल । जल्दी हरु ।

नटी : कोन विषय ?

सुत्रधार : देखलिऐ नहि । एखने जुलुश बहार भेलए ।
नटी : सुन्नलिऐ त । महंगीक विरुद्धमे छल ।
सूत्रधार : अहाके नै लगैए जे ई विषय कनेक टटका छै ।
नटी : (मोनेमोन तोलैत सन) लगैत अछि ।
सूत्रधार : तखन देरी कथीक । एखन डेढ घटा देरी अछि निर्धारित समयमे । एहि बीच सम्वाद तैयार भS सकैछ ।
नटी : मुदा एकटा बात कहु ।
सूत्रधार : (अगुताइत) जे कहवाक हो जल्दी कहु ।
नटी : महगीं कोनो तलगर विषय नहि भेल ।
सूत्रधार : (साश्चर्य) अएँ ? महगी कोनो तलगर विषय नै ! (मोढापरसं उठि जाइत अछि)
नटी : (उठैत) एहन नै जे लोकके झकझोडि दैक ।
सूत्रधार : हद भS गेल । औजी, लोकके जेबीमे पाइ छै मुदा खएबाक लेल पेटमे विलाइ डड बैसकी करै छै ।
नटी : से त छै ।
सूत्रधार : कानो समानंक मोल आई की छै काल्हि की भS जाइछै । चाउर, दालि, पीआउज, तीमन तरकारी, छै कोनो नियंत्रण ?
नटी : हम त बजारो जायव छोडि देनेछी ।
सूत्रधार : तखन अहां कोना कहै छी जे महंगी कोनो तेहन विषय नै भेलै ?
नटी : नाटकीयताक कमि लगै छै ।
सूत्रधार : लोक त्राहिमाम् करैए आ अहांके नाटकियना सुझि पडैए । औ जी, मोनके छुअबला कोनो विषय नाटकमे चलतै ।
नटी : मुदा महगी एतेक व्यापक भS गेल अछि । जे आब ई विषय लोक अंगा लेने अछि ।
सूत्रधार : मुदा एहि देशमे कोनो सरकार छै कि नै ?
नटी : खुब छै, निर्वाचित सरकार छै ।
सूत्रधार : तखन हम कलाकार सभक की कर्तव्य भS जाइत अछि, समाजक समस्यापर सरकारक ध्यान खिची कि नहि ?
नटी : से एहिसं पूर्वो बहुत ध्यान खिचल गेल अछि ।
सूत्रधार : त की चैन सँ सुति रही ?
नटी : नहि, सुतबाक कोनो अर्थ नहि हयत ।
सूत्रधार : जं नहि सुती, त किछु त करही पडत ।
नटी : तकरा लेल आन विषय चुनु ।
सूत्रधार : (मुंहलटकबैत) विषय इहो बेजाय नै छल ।

सुत्रधार फेर स मुंहलटका बैस रहैए । तखने फेर उएह जुलुश घुमै छै - 'मंहगी - नियन्त्रण करु, अजय् चोर- गद्दी छोड ! प्रजातन्त्र जिन्दावाद !

सूत्रधार : (नटी स) हे, सुनैछी । एनाकरु, एकटा जुलुशबलाके घीचि कS आनु त ।
नटी : से किए ?
सूत्रधार : लाउने पहिने । बात बुझबै ने ।
नटी : ठीक छै । हम बजा अनैछी ।

नटी पार्श्वमे चल जाइछ । कनेक कालक वाद एकटा पुरुषके बजौने अबैछ । पुरुष - १ क हालति जर्जर छै । देहपर फाटल कमिज, मैल पेउन लागल धोती, रुख्खकेस, हाथमे एकटा प्लेकार्ड 'मंहगी नियन्त्रण करु' लिखल, मचपर पूर्ण प्रकाश पसरि जाइछ ।

सूत्रधार : (पुरुष - १ सँ) भाई साहेब, ई जुलुश कथीक छलै ?
पुरुष-१ : महगीक विरोधमे छलै ।
सूत्रधार : एहि जुलुशस महगीमे कमी भS जायत ?
पुरुष-१ : प्रजातन्त्र आबि गेलै से पता नै अछि ?
सूत्रधार : पता त अछि । की प्रजातन्त्र अएने महगी कम भS जाइछै ?
पुरुष-१ : नै, जुलुश निकालबाक स्वतन्त्रता होइछै ।
सूत्रधार : माने ई जुलुश निकालबाक एक्केटा प्रयोजन प्रजातंत्रक उपभोग, आकि नै ?
पुरुष-१ : अहा जे बुझी । हम सभ त नारा लगबैत जुलुश निकालैत रहब ।
सूत्रधार : लगैए एहि स भाओ कम हयतै ?
पुरुष-१ : (झौका क') औजी, हम कहैछी किने, ई प्रजातंत्रक उपभोग छै !

सूत्रधार कनेककाल गुम्म भ' जाइत अछि । पुरुष - १ क उपर निचां खूब गौर सं तकैत छै ।

सूत्रधार : भाई साहेब, एकटा बात कहब ?
पुरुष-१ : जल्दी बाजू, हमरा जुलुशमे सामिल होएबाक अछि ।
सूत्रधार : देहक ई हालति किए कएने छी ?
पुरुष-१ : ई हालति हम कैने छी । गजंब करैछी अहु ।
सूत्रधार : लगैए पिता गेलहु । हमर पुछबाक माने ई नहि छल । एना हालति भेल किए ?
पुरुष-१ : अहीक कारण !
सूत्रधार : (चौकैत) हमरे कारण । (क्षणिक विराम) नहि, हमरा त नहि लगैए जे हम किछुयो अहाके कयने होइ ।
पुरुष-१ : ई सरकार अहीक अछि ने ?
सूत्रधार : (अकचकाइत) नहि !
पुरुष-१ : तखन, हम एहि हालतिमे जुलुशमे चिचिआ रहल छी आ अहा एत्त बैसल बान चिबबैछी । से हम कोना बुझू !
सूत्रधार : ओह, त से गप छै । (क्षणिक विराम) साचबात त ई अछि हम कलाकार छी । आ नाटक देखएबाक लेल समस्या ताकि रहल छी ।
पुरुष-१ : समस्या ? औजी अहांक आंखि केहन अछि । की ई समस्या नहि थिक ? पढल - लिखल छी ने ?
सूत्रधार : छी त किछु
पुरुष-१ : (प्लेकार्ड दिश देखबैत) पढु की छै लिखल ।
सूत्रधार : (पढैत) म. ह. गी. नि. य. त्र. ण. क.....रु !
पुरुष-१ : आबो किछ बुझलिऐ किने ?
सूत्रधार : (नटी दिश ताकि) बात त ठीक बुझाइए । आवो अहाँक मन बदलल अछि किने ।

नटी : (पुरुष -१ दिश गौरसँ तकैत) हँ, समस्या इहो गंभीर अछि ।
तखने पाशर्वमे फेर जुलुश, नाराक स्वर भ्रष्टाचार बन्द करु, अजय .... चोर गद्दी छोड, प्रजातन्त्र जिन्दाबाद ! सूत्रधारक ध्यानं ओम्हरे जाइत सन देखि पडैछ । मोढापर वैसैत छैक । फेर उठि नटीके संकेत कऽ अपना दिश बजबैत अछि ।

सूत्रधार : विषय त भ्रष्टाचारो बेजाय नहि अछि ।

नटी : हम आव किछु ने कहब ।

सूत्रधार : तखन हम किछु ने कऽ सकब ।

नटी : इएह अछि पुरुष सभमे । जखन काज लेबाक रहत त मीठ मीठ बात कऽ स्त्रीके ठकि लेत । काज सुतरि गेल कि ..... ।

सूत्रधार : मुदा अहाँ तेहन जनानी नहि छी ।

नटी : फेर चापलुसी ?

सूत्रधार : ठीके कहैछी (वाम हाथ पीठपर धऽ लग खिंचैत) अहाँ बिना हम अपूर्ण छी ।

नटी : बुझलहु । किछु दर्शकोक खिआल करियौ ।

सूत्रधार : (जेना केओ विठुआ काटि लेने होइक) हँ, हँ, हम तकरे इन्तजाममे छीने ।
(चुप्पी)

नटी : से जल्दी करियौन !

सूत्रधार : सएह त पुछलहुं, की भ्रष्टाचारक समस्या ज्वलन्त नहि छैक ?

नटी : जरुर छै । कोनो अड्डा खाना होइ आव देखार घूस लैत छैक । जं किछु कहौ त हडताल, पट्टी, कलम वन्द नहि जानि की की ।

सूत्रधार : (प्रशन्न होइत) कहलहुं ने । अहाँ असल बुद्धिआरि छी । बात पकडि धरि तुरन्त लैत छिऐ ।

नटी : त की करबै ?

सूत्रधार : हमरा त बिचार अछि भ्रष्टाचारेपर भऽ चलओ आजुक नाटक ।

नटी : मुदा इहो आव ततेक ने पसरि गेल छै जे दर्शकके ओतेक मन नहि लगतनि ।

सूत्रधार : (कनेक खौंझा क') फेर अहाँ तिरिआ चरित्तर लगौलहुं ।

नटी : हँ, आव हम वकलेल भ गेलहुं ने !

सूत्रधार : (किछु सोचि) नहि, से कहबाक मतलब नहि । आगांमे एतेक सुन्दर विषय आयल अछि आ अहाँ छोडि देब कहै छी ।

नटी : छोडऽ कहाँ कहैछी । कहलहुँ जे दर्शकके मोन नहि लगतनि ।

सूत्रधार : तखन एहिमे भीतर जायल जाए । (क्षणिक विराम) हे, जाउ, जुलुश घुमल अबैए, एक गोटाके पकडने आउ ।

नटी : हँ, ई भऽ सकैए । किछु ओकरोसँ बुझिएली ।
नटी जाइत अछि आ एकगोटे कृषक सन व्यक्तिके बांहि धयने अबैत अछि । कृषकक हाथमे प्लेकार्ड छै 'भ्रष्टाचार बन्द करु' ।

सूत्रधार : (स्वागत करैत) आउ, भाई साहेब, आउ !
कृषक अबूझसन अनुहार लेने कखनो सूत्रधारके, कखनो नटीके देखैत अछि ।

नटी : (सूत्रधारके देखवैत) इएह बजौने छथि ।

कृषक : की बात छै ?

सूत्रधार : भाइ साहेब, ई कथीक जुलुश छै ?

कृषक : आँखि दुरुस्त अछि ने !

सूत्रधार : कनेक नरमेसँ बाजी त उत्तम ।

कृषक : हमरा जुलुशो छौरा देलहुं, आ कहैछी नरमी सँ बाजू ।

सूत्रधार : हम पुछलहुं ई जुलुश कथीक छलै ?

कृषक : भ्रष्टाचारक विरोधमे ।

सूत्रधार : जुलुश बहार कैलासँ भ्रष्टाचार बन्न भ जायत ?

कृषक : (रुक्ख सँ) ई प्रजातन्त्र छै से मालुम त अछि ने ?

सूत्रधार : खूब नीक जकां बूझल अछि ।

कृषक : प्रजातन्त्रमे एहिना जुलुश होइछै ।

सूत्रधार : मुदा जकरा हेतु होइ छै से कम होइ छै कि नै ?

कृषक : ताहि लेल थोडे जुलुश होइछै ।

सूत्रधार : आहिरेबा एतेक रौद बसातमे भ्रष्टाचार बन्द करबाक हेतु अपस्यांत छी - कथी लेल ?

कृषक : अहाँ त शुद्ध गमार बुझाइछी । प्रजातन्त्र उपभोग बरबाक लेल जुलुश ।

सूत्रधार : तखन भ्रष्टाचार कम करब मात्र बहाना भेल ?

कृषक : के कहैत अछि से ।

सूत्रधार : अहीक गप सं बुझायल ।

कृषक : लाल बुझक्कड छी अहाँ । चीन खातिर नहि भेल वस्तुक विरोधे प्रजातन्त्र छैने !

सूत्रधार : ओह ! तखन ?

कृषक : भ्रष्टाचार त एकटा बड भारी समस्या छैक । जहाँ जाउ ओतहि भ्रष्टाचार ।

सूत्रधार : (बात लोकैत) एक स एक । औजी दुखे गरजे खेत बेचलहुं । रजिष्ट्री कर गेलहुं त फांट फांट घुस देब पडल ।

सूत्रधार : बस ।

कृषक : वंशजक नाता सँ नागरिकता लेब गेलहुं, फोटो साटमे घुस देब पडल ।

सूत्रधार : आर किछु ?

कृषक : विनासेती भाइके टांग हाथ तोडि देने रहे, थाना गेलहुं त विना पाइ लेने पुलिस घटना स्थलपर नहि आयल ।

सूत्रधार : हूँ ।

कृषक : कोनो एहन अड्डा नै अछि जत्त काम करएबाकलेल किछु 'देब' नहि पडैत हो ।

सूत्रधार : (किछु सोचैत) समस्या त गंभीर अछि ।

कृषक : औजी 'मृत्यु दर्तो करब' काल सेहो सचिव पाइ मंगै छै ।

सूत्रधार : हद भ' गेल ।

कृषक : एक दिश महंगी, दोसर दिश भ्रष्टाचार । कहु लोक की करौ ।

सूत्रधार : एहनमे जुलुश निकालबास नीक दोसर कोन उपाय छै ।

कृषक : (गौर सँ सूत्रधार आ नटीके देखैत) मुदा अहाँ सभ ई किए पुछै छी ?

सूत्रधार : ओहिना, वात बुझ चाहै छलहुं ।

कृषक : (सशंकित भऽ) नै लगै छी कोनो सी. आइ. डी. ने होइ ।

सूत्रधार : (हडवराकऽ) नै, नै वापरे एहन आरोपनै लगाउ ।

कृषक : तखन ?

सूत्रधार : हम सभ कलाकार छी - नाटक खेलबाक लेल समस्या तकैत छी।

कृषक : ओह! (क्षणिक विराम) भत्रष्टाचार केंहन समस्या लागल ?

सूत्रधार : (नटी दिश तकैत) बड सशक्त ! की ?

नटी : हँ, हमरो ई अपील कैलक अछि।

सूत्रधार : त भS चलो एकरे तैयारी ?

नटी : वेजाय कोन ?

कृषक : ठहरु !

सूत्रधार : (अकचका) की भेल ?

कृषक : भ्रष्टाचार सँ सम्बन्धित समस्या बड महीन होइछै।

सूत्रधार : सेत होइछै। मुदा ..... ।

कृषक : (बात लोकत) तएँ, एहन पात्रक निर्माण करु जे ठीके भ्रष्टाचार निवारण करए।

सूत्रधार : अहाँक मतलब ?

कृषक : साफ मतलब अछि। भ्रष्टाचार मेटाएबालेल जकर नियुक्ति होइ छै ओ तकरो सँ पैघ भ्रष्टाचारी भS जाइए।

सूत्रधार : ओह !

कृषक : सरकार मूल्य नियत्रण करबाक लेल छापामारी करै छै।

सूत्रधार : सुनैत छिऐ।

कृषक : मुदा, ओत्तहु घोटाला होइछै। लेनदेन होइछै। जे जाइए सएह बदनाम भS जाइए।

सूत्रधार : सेत छै मुदा काज त रोकल नहि जा सकैछ।

कृषक : तएँ ने पात्रक चुनाव कनेक सावधानी स करब।

सूत्रधार : सुझाव उत्तम अछि। (क्षणिक विराम)आब हमरा सभके तैयार भS जएबाक चाही।

नटी : हौ चली आब।

तखने पार्श्वमे फेर जुलुश आ नाराक स्वर सुनि पडैछ - 'स्थानिय प्रशासन मुर्दावाद, अजय चोर - गद्दी छोड, प्रजातंत्र जिन्दावाद !'

सूत्रधार - नटी दुनू साकांक्ष भS जाइछ। सूत्रधार किछु सोचैछ आ फेर कृषकके डेन पकडि पुरुष -१ क बगलमे जा ठाढ क दैछ। कृषक फ्रीज भS जाइछ।

सूत्रधार व्यग्रता स टहल लगैछ। मोढापर बैसि जाएछ। फेर उठि जाइत अछि।

सूत्रधार : (नटीसँ) सुनैछी ?

नटी : हँ, नीक जकां।

सूत्रधार : प्रशासनके गाडी पढल जा रहल छै। मानें स्थिति आरो जटील छै।

नटी : हमरो लगैए। जं सुरक्षे देब बलाक विरोध होइ त बात बेसी खराब मानल जएबाक चाही।

सूत्रधार : (किछु सोचैत) भ्रष्टाचारो कोनो कमजोर विषय त नहि अछि, मुदा ज आगामे आबिए गेल त एकरो एक बेर देखिएली।

नटी : मुदा ई क्रम कहिआ धरि चलत ?

सूत्रधार : जा धरि उपयुक्त समस्या नहि भेटत ता धरि न चलाबही पडत।

नटी : समयपर विचार अछि कि नहि ?

सूत्रधार : (घडी देखैत) हँ, आब आधा घटा मात्र शुरु कर' मे बाँकी अछि।

नटी : तखन सोचि लिअ, फेर बेइज्जत ने भS जाइ।

सूत्रधार : कनेक जल्दी लाउने, एकगोटे। बात बुझि लैत छिए। जं एतेक त किछु आर।

नटी : जे आज्ञा हजुरक ! (मुस्की)

नटी जाइत अछि। सूत्रधार ओम्हरे गंभीर मुद्रामे तकैत अछि। नटीक संग एकटा पुरुष - २ क प्रवेश। हाथमे 'शांति सुरक्षा कायम हो' क प्लेकार्ड। एकटा आम जनता सन लोक। ओकरा देखैत सूत्रधारक आंखि चमकि जाइछ।

सूत्रधार : आउ, आउ, भाई जी !

पुरुष-२ : (किछु झझकैत) ऐं, हमरा एत्त किए बजाओल गेल अछि।

सूत्रधार : भाइजी, कोनो चिन्ता नै। हम किछु जान' चाहै छी।

पुरुष-२ : से किए ?

सूत्रधार : ओहिना। जिज्ञाशा अछि।

पुरुष-२ : (सशंकित भS) पुछु।

सूत्रधार : ई जुलुश कथीक रहैक ?

पुरुष-२ : शांति - सुरक्षाक हेतु। स्थानीय प्रशासनक विरोधमे।

सूत्रधार : जुलुश सँ लोक सुरक्षित भS जायत ?

पुरुष-२ : (आंखि तरेरिकS) त की लोक अपन प्रजातान्त्रिक अधिकार छोडि देत ?

सूत्रधार : नहि, से त हमर मतलब नहि छल।

पुरुष-२ : त की छल ?

सूत्रधार : एहि जुलुश सँ प्रशासनक नीन टुटतै ?

पुरुष-२ : ई ओकर काज छै। जं अधिकार अछि त जुलुश बहरएबे करतै।

सूत्रधार : ह सेत छैहे। (क्षणिक विराम) मुदा सरकारक प्राथमिक आवश्यकता त शांतिए सुरक्षा छै फेर ..... ।

पुरुष-२ : अहाँ बड निश्चिन्त लगै छी। गाम - देहातमे हाहाकार मचल छै। पता अछि।

सूत्रधार : की भेलै से ?

पुरुष-२ : की भेलैए। (जेबी सं एकटा कागज बहार करैत) देखै छिऐ ई की अछि ?

सूत्रधार : (गौर सं तकैत) एकटा कागज जकां अछि।

पुरुष-२ : ई निवेदन छिऐ। एक मास स जेबीमे लS कS वौआ रहल छी। केओ सुन' बला नहि।

सूत्रधार : की भेलए ?

पुरुष-२ : की कहु ! एक मास पूर्व हमर सब श्री सम्पत्ती गोट - गोट क' लुटि लेलक।

सूत्रधार : (साश्चर्य) लुटि लेलक ?

पुरुष-२ : ह।

सूत्रधार : के औ ?

पुरुष-२ : एक गोटे रहय त नाम बताउ। हजारो लोक रहै। दिनेमे घरक एक - एक दाना ल गेल। खाएलेल आफत भS गेल।

सूत्रधार : हे भगवान ! बड अन्याय भेल। कोना भेल ?

पुरुष-२ : बात मामुली रहै । एक दिन पर्व हमर आदमी ओइ पक्षके दू - तीन आदमीके दू चारि सटका मारि देने रहै, कहा - कहीमे बस !
सूत्रधार : एतबे टा बात रहै ।
पुरुष-२ : हँ यौ । आ घर - दुआर त लुटबे कैलक । हमर १० - १५ आदमीके होस्पीटल ओगरा देने अछि ।
सूत्रधार : तखने ?
पुरुष-२ : सएह निवेदन ल' क' बौआ रहल छी । स्थानियं प्रशासन ल' नहि रहल अछि ।
सूत्रधार : तखन की करबै ?
पुरुष-२ : करबै की ? एहिना ई निवेदन लोकके देखबैत रहवै ।
सूत्रधार : बस ?
पुरुष-२ : बर बेसी करबै त एहिना जुलुशमे सामेल भ' जिन्दावाद मूर्दावाद लगादेबै ।
सूत्रधार : मुदा गाम गाम पसरल अशांति - असुरक्षा हटि त नहि सकत ?
पुरुष-२ : ई त सरकारक काज छै ने । अपन तंत्रके शांति सुरक्षामे लगावओ ।
सूत्रधार : बात त उचित थिक । (किछु सोचैत) लगैए जन धनक असुरक्षा बड पैघ समस्या थिक । (नटीसं) की सोचैछी ?
नटी : समाजमे व्याप्त ई भय त्रास कोनो कमजोर समस्या नहि छैक ।
सूत्रधार : त किएक ने एहीपर हम सभ विचार करी ।
नटी : बेजाए त नहि । नीक प्रभाव पाडि सकैत अछि ।
पुरुष-२ : त हम आव चली ?

सूत्रधार किछु कह' चाहैत अछि कि तखने फेर पृष्टभूमिमे जुलुश आ नाराक स्वर - 'बेरोजगारी दूर कर', अजय चोर गद्दी छोड', प्रजातन्त्र जिन्दाबाद' सुनि पडैछ । सूत्रधार एकबेर फेर किंकर्तव्य विमूढ भ' किछु गुनधुन कर' लगैछ । एक नजरि नटी दिश देखैछ, फेर पुरुष - २ के वांहि पकडि कृषकक बगलमे ठाढ क' दैछ । पुरुष - २ फ्रीज भS जाइछ ।

सूत्रधार : लगैए फेर कोनो जुलुश बाहर भेलैए ।
नटी : (अकानैत) ई बेसी ताओ बला बुझाइए ।
सूत्रधार : की हर्ज, एकरो गमिएली ।
नटी : मुदा समय कहां अछि ? शुरु हयबामे १० - १५ मिनट सँ बेसी नहि हयत ?
सूत्रधार : लाउ ने, देखि लैछी । जं एतेक अबेर भइए गेलै त दर्शक सभसं क्षमा मांगि लेबनि ।
नटी : मात्र क्षमा मगने नहि नै हयत ।
सूत्रधार : त की ?
नटी : जाहिले बजौने छियनि से त पूर्ति करही पडत ।
सूत्रधार : नएं ने, जल्द जाए कहै छी । लाउने ककरो ओहि महक ।
नटी , : अच्छा, हम जाईछी ।

सूत्रधार फेर व्यग्र भ टहल लगैछ । तुरन्ते नटी एकटा नयां फैशनक युवकके लेने प्रवेश करैछ । युबकक हाथमे राखल प्लेकार्ड बोरो जगारी दूर करु' लिखल छै ।

युवक : (प्रवेश करिते) अहा - हा, हमरा अहा कत्त लेने जाइ छी ?
सूत्रधार : भाइ जी, हमही कहने छलियनि बजाब' ।

युवक : (गुम्हरि क तकैत) से अहां बजब' बला के छी ?
सूत्रधार : समस्यामे फसल एकटा निरिह लोक ।
युवक : की माने ?
सूत्रधार : एखन जुलुश अही सभक रहय ने ?
युवक : हँ ।
सूत्रधार : किएक बहार कैने रही ई जुलुश ?
युवक : की अहाँके आँखि कान नहि अछि ?
सूत्रधार : अछि, मुदा बात नारा सँ ओतेक नहिने बुझाइछै ।
युवक : हम सभ बेरोजगार छी । रोजगारीक लेल जुलुश निकालैछी ।
सूत्रधार : अहाके लगैए जुलुश वहार कैलासँ रोजगार भेटि जाएत ?
युवक : ई प्रजातन्त्रक उपलब्धि थिकै ?
सूत्रधार : ई जुलुश अथबा वेरोजगारी ?
युवक : (आँखि तरेरिकS) अहाँके मजाक लगैए हमरा सभक अभियान ?
सूत्रधार : नहि : मात्र वात फरिछएवा लेल ई कहलहुं ।
युवक : सरकारके वात पहुँचएबाक लेल आव जुलुसे एक मात्र माध्यम रहि गेलछै ।
सूत्रधार : हूँ (क्षणिक विराम) की पढलो लिखल के रोजगारी नहि भेटै छै ?
युवक : (ठोढपर विद्रुप मुस्की) पढल लिखल! औजी हम एम. ए. पास कS कS अएलहुं मुदा नोकरी भेटि नहि रहल अछि ।
सूत्रधार : एम. ए. पास ?
युवक : वहुतो ओ. सी. जे. टी. ए. , शिक्षक, हेल्थ असिस्टेन्ट तालिम कS कS घुमि रहल छथि । नोकरी नहि छनि ।
सूत्रधार : से किए नहि छनि ?
युवक : ओ मंत्रीक सम्वन्धी नहि छथि ।
सूत्रधार : अच्छा ?
युवक : हुनका लगमे पाइ नहि छनि जे ओ विचला ककरो घुस दS सकनाह ।
सूत्रधार : घुस ?
युवक : आ से कोनो कम नहि । आधा कमाई !
सूत्रधार : तखन ?
युवक : एहिना फुटपाथपर वौआएबापर बाध्य छथि, ने सोर्स आने फोर्स ।
सूत्रधार : भ सकैए कम्पीटिशनमे नहि टिकैत होइ ।
युवक : सव गलत वात थिक । लिखितमे पास क मौखिकमे छांटि देल जाइछ ।
सूत्रधार : हूँ (क्षणिक विराम) अहाँ सभ की सोचै छी ?
युवक : नोकरी लेल आबाज उठबैछी । नहि भेटत त एहिना जुलुश वहार कS मोनक भरास निकालब ।
सूत्रधार : एहि सँ नोकरी भेटत ?
युवक : त करब की ? हत्या, डकैती, लुट पाट अथवा चरेस स्मैक आदि डत्रग्स खा कS प्राण द दिअ ।
सूत्रधार : (हडवडा कS) नहि, नहि एहन वात सोचवो ने करु ।
युवक : (कनेक रुआंसी होइत) त अही कहु, हम सब की करु ?

सूत्रधार : प्रश्न बड गंभीर अछि । आइ देशमे जाहि गति सँ वेरोजगारी बढि रहल छै ओ समस्या गंभीर कयने जाइ छै ।

युवक : घरमे सभक परिवार छै । वाल-वच्चा छै, माय-बाप छै, सभक खर्च - वर्च ! कहु कोना चलतै ?

सूत्रधार : ठीके ।

युवक : (कनेक गंभीर हौइत) मुदा अहाँ सभ हमरा बजौलहुं किए ?

सूत्रधार : इएह बुझवालेल जे अहाँक समस्या की अछि ?

युवक : (प्रशन्न होइत) त की अहाँ हमर समस्या समाधान कS सकैछी ?

सूत्रधार : (हडवडा क') नहि, नहि हम त स्वय समस्यामे पडल छी ।

युवक : अहुंके नोकरी चाही ?

सूत्रधार : से समस्या हमर नहि अछि ।

युवक : (अगुता कS) त जल्दी वाजु ने । फेर आम सभामे जाए पडत ।

सूत्रधार : वास्तवमे हम सभ कलाकार छी ।

युवक : (शव्दपर जोड दैत) कलाकार !

सूत्रधार : हँ ।

युवक : हमरा सभक समस्या स अहाँके कोन मतलव ?

सूत्रधार : मतलव अछि । (क्षणिक विरामक वाद दर्शक दिश तकैत) हे देखै छी दर्शक लोकनिके ।

युवक : हँ, सभ एम्हरे ताकि रहल छथि ।

सूत्रधार : ताकि कहाँ रहल छथि, गुम्हरि रहल छथि, देखै नै छीयनि, आँखि स चिनगी उडि रहल छनि ।

युवक : किनकापर ?

सूत्रधार : हमरे पर ।

युवक : अहाँ पर । किएक ?

सूत्रधार : सएह समस्या अछि ।

युवक : जल्दी फरिछाउ ।

सूत्रधार : हम एखन नाटक देखएबाक घोषणा कS चुकल छी । कलाकार सभ ठीक समय पर हडताल कS देलनि ।

युवक : तखन ?

सूत्रधार : तखन भेल जे कोनो टटका समस्या लS कS हमही सभ कोहुना प्रदर्शन क दिऐ !

युवक : सएह समस्याक खोजीमे लोकके बजाबजा पुछै छीऐ। कनहु भरिगर समस्या भेटि जाए।

सूत्रधार : हमर समस्या केहन लागल ?

सूत्रधार : सभ स भरिगर !

युवक : तखन ?

सूत्रधार : हम सभ तैयारी करव । (नटीसँ) हौ, मिलाउ भांज !

नटी : ठीक छै ।

नटी पृष्टभूमिमे जाए चाहैत अछि कि पार्श्वमे फेर जोडगर हल्ला आ नारा सुनि पडैछ 'प्रतिक्रियावादी - मूर्दावाद, अंजय सरकार - जिन्दावाद, प्रजातन्त्र - जिन्दावाद' ।

सूत्रधार : (नटी के रोकैत) ठहरु ।

नटी : आब फेर की भेल ?

सूत्रधार : सुनै नहि छिऐ ?

नटी : (अकानैत) लगैए फेर कोनो जुलुश अछि ।

सूत्रधार : नएँ ने ठहर कहलहुं । किए ने एकरो .... ।

नटी : (जोर दैत) नहि, आब हद भS गेल । प्रजातन्त्रमे एहिना नारा जुलुश होइत छैक । कनेक स अहाँ समस्या बुझैत रहब ।

सूत्रधार : तैयो कने भजा लितहु त मोनमे खटका नहि रहैत ।

नटी : कथीक खटका ?

सूत्रधार : इएह जे, जाहि समस्यापर हम सभ नाटक कयलहु ताहूस नमहर कहुं छुटि ने गेल होए ।

नटी : (कनेककालक चुप्पीक बाद) त एकटा बात हम कहि दैत छी ।

सूत्रधार : की ?

नटी : एहि बेर जँ ओहि महक ककरो बजएबाक बात हयत त हम नहि जाएब ।

सूत्रधार : लगैए अहुंके प्रजातन्त्रक हबा लागि गेलए ।

नटी : वात त पहिने बुझियौ ।

सूत्रधार : की ?

नटी : आन पुरुषके एनाकS कS वजा कS आनब हमरा नहि नीक लगैए ।

सूत्रधार : ओह (क्षणिक विराम) तँ एकटा बात करु ।

नटी : की ?

सूत्रधार : (युवक दिश ईशारा करैत) हिनका नाबे बिलमाउ, हमही एहि बेर ककरो गहने अबैछी ।

नटी : हँ, ई बरु भ सकैए ।

नटी युबकक हाथ पकडि पुरुष - २ क वगलमे ठाढ कS दैछ । युवक फ्रीज भ' जाइत अछि । नटी मंचक आगां अपन मोढापर आबि बेसि रहैत अछि । तखने सूत्रधारक सँग एकटा खधरक ठेहुनसँ निचां धरिक कुर्ता आ चुस्त पायजामा पहिरने पुरुष - ३ क प्रवेश । नटी ओकरा सभके देखिते हडबडा कS उठि जाइत अछि ।

सूत्रधार : श्रीमान् भ गेलै, एत्तहि धरि । (मोढा दिश ईशारा करैत) बैसल आओ ।

पुरुष-३ : (दुनके गंभिरतापूर्वक देखैत) हमरा एत्त वजएवाक कारण ? (बैसैछ)

सूत्रधार : अन्यथा नहि ली । कनेक जुलुशक सन्दर्भमे ..... ।

पुरुष-३ : ओह, अहाँ सभ पत्रकार छी ?

सूत्रधार : जी नहि, एकटा समस्यामे ओझरायल जिज्ञाशु मात्र ।

पुरुष-३ : कोन समस्या ?

सूत्रधार : ई जुलुश कथीक रहै ?

पुरुष-३ : ई सरकारी जुलुश छलै ।

सूत्रधार : (साश्चर्य) अएँ, सरकारो जुलुश निकालैत छैक ?

पुरुष-३ : त की सरकारक सँग समस्या नहि होइत छैक ?

सूत्रधार : केहन समस्या ?

पुरुष-३ : विपक्षी सभक विरोधक समस्या, कर्मचारी हडतालक समस्या, शांति सुरक्षा भंगक समस्या .... ।
सुत्रधार : (माथा डोलबैत) बुझाइए सरकारो सँग खूबे समस्या सभ छै ।
पुरुष-३ : लोक बुझै नहि छै । आ विरोध बाधा कर लगैछ ।
सूत्रधार : आ ओ सभ कहै छै सरकारे ने बुझै छै ।
पुरुष-३ : (उठैत) झूठ, सभ झूठ थीक । ओ सभ आनक ईशारामे चलैए ।
सूत्रधार : (सँगे उठैत) तखन ई जुलुश, नारा सभ झूठ थीक, आनक ईशारामे होइछ ?
पुरुष-३ : त की एहुमे सन्देह रहि गेलैए ?औजी सरकारके कमजोर करबाक सभक प्रयास थिक ।
सूत्रधार : ककरा सभक ई प्रयास भ' सकैछ ?
पुरुष-३ : ई बात नँ साफ भ गेल अछि, प्रतिगामी तत्वक ईशारामे ई सभ भ रहल अछि । सभ प्रतिक्रियावादी सभ अछि ।
सूत्रधार : मुदा प्रजातन्त्रमे हक भोग मांगबाक अधिकार त सभके छैक ।
पुरुष-३ : पहिने सरकार अपन जडि मजगूत करत तखन ने आनके किछु देतैक ।
सूत्रधार : तैयो मंहगी, भ्रष्टाचार, असुरक्षा, वेरोजगारी के देखन ?
पुरुष-३ : ककरा पलखति छै जे ई सभ देखैत रहओ । एखन अपनो गर नहि बैसल अछि ।
सूत्रधार : (साश्चर्य) की माने ?
पुरुष-३ : औजी, वात साफ छै । हम सभ एकटा अदना कार्यकर्ता छी । वर्षो संघर्ष कयलहु त ई समय आयल अछि । पहिने अपनो लेल किछु त सोंच पडत ।
सूत्रधार : ओह (क्षणिक विराम) अपने .... ?
पुरुष३ : हँ, हम क्षेत्र न. ।
सूत्रधार : (वात कटैत सँगहि दुनू हाथ जोडैत) नमस्कार ।
नटी सेहो हाथजोडि नमस्कार करैत अछि ।
पुरुष-३ : हँ, हँ ठीक छै । हमरा संगमे फालतु समय नहि अछि । रंगभूमिमे बिशाल जनताक समुह प्रतिक्षामे हयत ।
सूत्रधार : उचिते हयत ने ।
पुरुष-३ : मुदा अहाँ सभ के छी ?
सूत्रधार : मूर्ख ?
पुरुष-३ : (साश्चर्य) मूर्ख, ई कोनो परिचय नहि भेलै ?
सूत्रधार : साँच त इएह अछि, हमरा सभक कोनो परिचय नहि होइछ ।
पुरुष-३ : की माने ?
सूत्रधार : जी श्रीमान् । पाँच सालमे एक्केबेर हमरा चिन्हल जाइत अछि ।
पुरुष-३ : (अगुताकऽ) साफ बनाउ ?
सूत्रधार : हम सभ जनता छी ।
पुरुष-३ : ईहो कोनो स्पष्ट परिचय नहि भेलै ।
सूत्रधार : वास्तवमे हम सभ कलाकार छी ।
पुरुष-३ : अच्छा ! कोन काम अछि बाजु । ककरो वदली कराबके अछि, अथवा नियुक्ति । चाहे 'लाइसेंसक जोगाड भिडाब' केअछि की कोनो ठेका पट्टाक ।
सूत्रधार : (साश्चर्य) जी ..... ।

पुरुष-३ : निधोष कहु । सभक हिसाब फूट फूटछै ।
सूत्रधार : जी हमरा सभके कोनो काज नहि करएबाक अछि ।
पुरुष-३ : (वीगडि कऽ) तखन एतेक समय किए बरबाद कऽ रहल छी ?
सूत्रधार : हम सभ नाटक खेलएबाक नेआरमे छी । मुदा ..... ।
पुरुष-३ : (वीचेमे बातके कटैत) त हम की कऽ सकैछी ? हमरा नाटक नहि अबैए ।
सूत्रधार : कोनो भरिगर समस्या चाही हमरा सभके ।
पुरुष-३ : ईहो त कोनो विभाग वा मंत्रालयमे नहि भेटैत अछि ?
सूत्रधार : जी नहि, ई त अपने ... ।
पुरुष-३ : (चौकि) हम, की हम भरिगर समस्या लगैछी ?
सूत्रधार : से हमर मतलब नहि अछि । अपने चाही त तुरत भेटि सकैत अछि ।
पुरुष-३ : (स्टूलपर सँ उठैत) नहि, हमराबुते समस्या ताकल नहि हयत । हँ, कही त ककरो थुना सकैछी, ककरो बाहर कऽ सकैछी । ककरो फोडि सकैछी त ककरो मिला सकैछी ।
सूत्रधार : जी नहि, से सब किछु ने चाही ।
पुरुष-३ : अच्छा, त हम चलैछी । लोक अगुताइत हयत । हँ, संभव भेल त घुमब एही बाटे ।
सूत्रधार : ठीक छै, नहि एखन त पाँचो वर्षपर एकबेर दर्शन अववूय होइत रहय ..... ।
पुरुष - ३ के झटकारि कऽ प्रस्थान ।
सूत्रधार झखा कऽ अपन स्टुलपर बैसि रहैत अछि ।
सूत्रधार : (नटी सँ) आब ?
नटी : एक स एक समस्या त अछिए, जे चुनी ।
सूत्रधार : सएह त समस्या भ' गेल । लगैए कोनो समस्या ककरो स कम नहि अछि ।
नटी : आब एना थकथकएने काम नहि चलत । जल्दी किछु करु ।
सूत्रधार : अहुँ किछु सोंचुने । हमर माथ फाटल जाइए ।
नटी : अहाँक आगा हम की सोचु ।
सूत्रधार : फेर अहाँ भसिआ रहल छी । ओना नै हयत वैसु स्थीर सँ आ ध्यान मग्न भऽ किछु सोचियो । कही अहीके फुरा जाए !
नटी : लिअ, हम बैसि रहैछी । फुराए नहि फुराए ई अहाक भागे ।
दुनु स्टुलपर फ्रीज भ जाइछ ।
क्षणिक अन्हार
प्रकाशक घेरा एक पतिआनीस ठीक चारु आकृतिपर पडैत अछि । आकृतिमे हलचल देखल जा सकैछै । क्रमश : चारु पात्र मंचक आगां भागमे अबैत अछि ।
पुरुष-१ : (कृषक के निहारैत) लगैए कोनो जुलुशक तैयारी छै ?
कृषक : अहुँक हाल तेहने सन लगैए । कत्त छै जुलुश ?
पुरुष-१ : मुदा अहाँ कथीलेल यौ ?
कृषक : भ्रष्टाचारक विरुद्धमे छी । बात बात पर पाइ, घुस छोटछीन काज कयक दिन लगादेत । तकरे विरोध करैत जुलुश बहार केने छी ।
पुरुष-१ : ठीक कहै छी । बड विकट समस्या छै ।
कृषक : आ अहाँक ?
पुरुष-१ : महगी । देखै नहि छिऐ कोना बढल जा रहल अछि सुरसाक मुँह जकां ।

कृषक : अलबत्त विषय अछि। घर - घरमे इहे रोना छै एखन।
पुरुष-१ : (युवक सँ) विद्यार्थी, किए प्लेकार्ड उठौने छी ?
युवक : वेरोजगारीक मारल छी हम। लोकसेवा दैत - दैत बुद्धि सठिआगेल मुदा नोकरी नहि भेटल। तकरे विरोधमे जुलुश बहार कS रहलछी।
कृषक : (पुरुष - २ सँ) अहुँ लगै छी वेसीए पीडायल छी।
पुरुष-२ : औजी, पिडायल कहै छी। हद भS गेल अछि। लोकके शांति सँ जीअब कठीन भS गेल छै। बहु बेटीक ईज्जतपर पडि रहल अछि।
कृषक : (पुरुष - १ सँ) भाइ जी, ई विरोध ककरा विरुद्धमे अछि ?
पुरुष-१ : वात साफ छै सरकारक विरुद्धमे।
युवक : हम सभ जे जुलुश बहार कS रहल छी आखिर ककरा विरुद्धमे अजय सरकारक विरुद्धमे ने।
पुरुष-२ : ह यौ, बात त ठीके छै। ई महगी, भ्रष्टाचार, शांति सुरक्षा, बेरोजगारी समस्या सभक हेतु सरकारे जिम्मेवार अछि।
कृषक : तखन त सभ समस्याक जडिमे सरकारे भेल ?
युवक : (उत्तेजित होइत) ताहुमे कोनो सन्देह ?
पुरुष-१ : त किएने हम सभ पहिने एकजुट भ' क' जडिएपर प्रहार करी ?
पुरुष-२ : (माथ डोलबैत) एहिस समस्याक ओजन बढबे करत।
युवक : आ सरकारोक कानपर माछीयो भिनभिएनै त जरुर !
कृषक : (तनैत) ठीके। हम सभ सामूहिक रुपें जुलुश बहार करी।
पुरुष-१ : विचार उत्तम अछि ! (कृषकस) की औं ?
कृषक : एह, एहुमे कोनो सोचवाक बात छै। जखन जडि एक्के अछि त ताहीपर प्रहार होएबाक चाही।
युवक : तखन आगा बढु (नारा लगबैत मंच पर घुम लगैछ) बेरोजगारी ?
(तीनू एक्के संग) दूर करु !
युवक : अजय चोर !!
(तिनू एक्के संग) गद्दी छोर !!
युवक : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावाद !!
युवक : भ्रष्टाचार !
तीनू : बन्द करु !!
युवक : अजय चोर !
तीनू : गद्दी छोर !
युवक : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावाद !
पुरुष-१ : महगी !
तीनू : नियन्त्रण करु !

पुरुष-१ : अजय चोर !
तीनू : गद्दी छोर !
पुरुष-१ : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावाद !
पुरुष-२ : शान्ति सुरक्षा !
तीनू : कायम करु !
पुरुष-२ : अजय चोर !
तीनू : गद्दी छोर !
पुरुष-२ : प्रजातन्त्र !
तीनू : जिन्दावाद !
अन्तिम नाराक संग मंच स हटि जाइछ।
अन्हार
प्रकाश फेर स सूत्रधार आ नटी पर पड' लगैछ। दुनुक शरीरमे हलचल शुरु होइछ।
सूत्रधार : (नटीसँ) हे, किछ सूझल ?
नटी : (दार्शनिक भावमे) हम एक दम साफ देखि रहल छी।
सूत्रधार : (प्रशन्न होइत उठैत)
रधिया देवी !
जिन्दावाद !
रधिया देवी !
जिन्दावाद !
नटी : (मुंह बिझुका) आहिरेबा है नारा लगएबाक कोन तुक भेलै ?
सूत्रधार : प्रजातन्त्रमे पीतो लहरै छै त नारा लगाओल जाइ छै आ मोनमे खुशीयो अबै छै तखनो नारा लगाओल जाइछै।
नटी : तखन ई नारा कोन अवसरक छै।
सूत्रधार : अहाँक बुद्धि फुरएबाक प्रशन्नतापर।
नटी : दुत्, ओहिना बनबैत रहै छी।
सूत्रधार : अच्छा, अच्छा, बाजु त की फुरएलए ?
नटी : एतेक रास जुलुश ककरा विरुद्धमे रहै ?
सूत्रधार : सरकारक विरुद्धमे। (नारा लगबैत सन ...) अजय सरकार .....।
नटी : (बात लोकैत) फेर नारा। (क्षणिक बिराम)तखन सभ समस्याक जडिमे सरकार भेल ?
सूत्रधार : सभक आक्रोश त ओम्हरे रहैक।
नटी : साफ नहि लगैए सभ स पैघ समस्या सरकारे छैक।
सूत्रधार : (जेना किछु बुझैत) हँ, हमरो आब बात साफ साफ लागि रहल अछि।
नटी : नएँ, हम सभ अपन नाटकक हेतु सरकारेके पात्रमे राखी त कोन हर्ज ?
सूत्रधार : वेजाय त नहि, मुदा सरकार कोनो व्यक्ति त नहि होइछ जे मुख्य पात्रमे राखी।
नटी : हँ, ई समस्या भS सकैछ। एकटा एहन चरित्र खोजु जाहिमे सभ समस्या एक्के ठाम भेटि जाए।

सूत्रधार : (मोढापर लुद् सँ वैसैत) दूत्, फेर त खोजबाक समस्या रहिए गेल ।
तखने कनेक दूर नाराक स्वर सुनि पडैछ - नेता जी, जिन्दाबाद !

नटी : भेटि गेल !

सूत्रधार : की भेटि गेल ?

नटी : पात्र ।

सूत्रधार : (प्रशन्न होइत) हँऽ, के ?

नटी : नेता जी !

सूत्रधार : (साश्चर्य) नेता जी ! (क्षणिक विराम) वाह अद्‌भूत चरित्र ।

नटी : आब भेल ने मोन हरियर !

सूत्रधार : अवश्य । नाटकक हेतु समस्या आ पात्र दुनु एक्के ठाम । आब देखू ने केहन नाटक हम तैयार करैछी ।

नटी : कनेक समयोपर ध्यान देबै ।

सूत्रधार : ओह, (घडी देखैत) वाप रे ! समय त समाप्त अछि । सुनबाक समय भऽ रहल छै, आब !

नटी : (निश्चिन्त भऽ मोढापर बैसैत) आब त अही सोचबै ।
दूर सँ लग होइत आवाज - नेता जी ... ।
जिन्दाबाद !
(साकांक्ष भऽ अकानैत) लगैए नेताजी एम्हरे आबि रहल छथि ।

सूत्रधार : आबियो सकै छथि। वाजि कऽ गेल छलाह ।

नटी : नखन ?

सूत्रधार : हुनका अएवा सँ पूर्व घसकी ।

नटी : आ नाटक ?

सूत्रधार : आब त नहिए भेल । (दर्शक दिश)
आदरणीय दर्शक लोकनि, एतेक काल नाटकक आशामे हम सभ अपने सभके घुरिऔलहु नकरा लेल क्षमा करब ।

नटी : (उठैत फेर) कहिया हयत से कहि दिऔन ।

सूत्रधार : हँ, ज कि समस्या आ नकर उपयुक्त पात्र भेटिए गेल अछि, हम अगिला सप्ताह फेर अपने सभकें नवका नाटकक सँग कष्ट देब । एखन शुभ रात्री ।
नटी सेहो हाथ जोडि दैछ ।

अन्हार

* * * * *



राम भरोस कापडि 'भ्रमर'

जन्म : २००८ साल श्रावण

शिक्षा : एम. ए. (त्रि. वि. वि.)

स्थायी पता : १ । ५५५, सरस्वती सदन

जनकपुर धाम, धनुषा (नेपाल)

कृति -

मौलिक :

- बन्नकोठरी : औनाइत धुंआ (कविता संग्रह), २०२९ साल ।
- नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), २०३६ साल ।
- तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह), प्रकाशक : मैथिली अकादमी पटना,१९८४ ई. ।
- मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह), १९८३ ई. ।
- अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह), १९९० ई. ।
- रानी चन्द्रावती (नाटक), २०४५ साल ।
- एकटा आओर बसन्त (नाटक), २०५२ साल ।
- महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), २०५४ साल ।

सम्पादन :

- मैथिली पद्य संग्रह, प्रकाशक : नेपाल राजकीय पज्ञा प्रतिष्ठान, वर्ष २०५१ साल ।
- लाबाक धान (कविता संग्रह), प्रकाशन वर्ष २०५१ साल ।
- माथुरजीक 'त्रिशुली' खण्डकाव्य, प्र. व. २०४६ साल ।
- गामघर साप्ताहिके गत १५ वर्ष सं सम्पादन । प्रकाशन । 'आंजुर' मैथिली मासिकक सम्पादन प्रकाशन ।

सम्मान :

- नेपाल राजकीय पज्ञा प्रतिष्ठानद्वारा पहिल बेर २०५२ सालमे घोषित ५० हजार टकाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कारक पहिल प्राप्तकर्ता । प्रधानमंत्रीद्वारा प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार प्रदान ।
- विद्यापति सेवा संस्थान दरिभंगाद्वारा सम्मानित ।

प्रकाशोन्मूख :

- अन्तत : (कथा संग्रह)
- मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह)
- भयो, अब भयो ('नहि आब नहिं'क मनु ब्राजाकीद्वारा कयल नेपाली अनुवाद)
- बिसरल - बिसरल सन (कविता संग्रह)

[illegible] प्रकाशन [illegible], सरस्वती सदन, जनकपुर धाम-१ फोन नं. [illegible]